www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 12 जनवरी 2014

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 12 जनवरी 2014 से 18 जनवरी 2014

पौष शु.–12 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 90, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## डी.ए.वी. यूनिट-8, भुवनेश्वर में मनाया गया स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा तथा आर्य युवा समाज, ओडिशा के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस'', डी.ए.वी. युनिट–8 विद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा के प्रांगण में मनाया गया। उस उत्सव में ओडिशा के प्रमुख 17 डी.ए.वी. विद्यालयों से विद्यार्थी तथा अध्यापक सम्मिलित हुए। सर्व प्रथम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, ओडिशा की प्रधान डॉ. श्रीमती भाग्यवती नायक और पधारे हुए महानुभावों ने दीप प्रज्ज्वलित करके सामूहिक यज्ञ का शुभारंभ किया। वेद मन्त्रों के ध्वनि से वातावरण गुंज उठा। यज्ञ के उपरान्त ''आर्य समाज'' के विषय पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखा गया था जिसमें आए हुए विद्यार्थीयों ने भाग लिया।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि ई. श्री प्रियव्रत दास, प्रधान, आर्य समाज, शहीद नगर, भुवनेश्वर; मुख्यवक्ता ई. श्री ब्रजबन्धु पंडा तथा विशिष्ट अतिथि स्वामी अभेदानन्द सरस्वती महानुभावों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को श्रद्धारुपी जीवन व्यतीत करने के साथ उनके आदर्श को अपनाने के लिए उद्वोधन दिया।

इस समारोह में डी.ए.वी. के क्षेत्रीय निर्देशक डॉ. श्री हिमांशु कुमार महांति एवं डॉ. श्री केशव चन्द्र शतपथी, स्थानीय प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष श्रीयुक्त मदन मोहन पंडा, ओडिशा के पूर्व पोलिस महानिर्देशक तथा डी.ए.वी कलिंग नगर के अध्यक्ष श्री शरत वंद्र मिश्र, सह–संजोजिका श्रीमती ममता वानार्जी के साथ ओडिशा के विभिन्न डी.ए.वी. विद्यालयों से अध्यक्ष–अध्यक्षा उपस्थित थे।

स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवनी पर नृत्यनाटिका देखकर सभी मंत्रमुग्ध हो गये। आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में एल.आर.डी.ए.वी. कटक ने सर्वोच्च अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान व डी.ए.वी. पोखरीपुट, भुवनेश्वर ने दूसरा स्थान हासिल किया जिस पर उन्हें पुरस्कृत किया गया। अंत में आर्य युवा समाज के प्रधान श्रीमती नमिता महांति ने धन्यवाद अर्पण करके उपस्थित सभी सज्जनों का आभार प्रकट किया।

## डी.ए.वी. मानसा में महात्मा हंसराज ब्लाक का हुआ उद्घाटन

एस.डी.के.एल.डी.ए.वी. सी. सै. पब्लिक स्कूल, मानसा के प्रांगण में नवनिर्मित 'महात्मा हंसराज बहुपयोगी ब्लॉक' के उद्घाटन के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित किया गया। इस आयोजन में मुख्य अतिथि श्री एच.आर. गन्धार, सलाहकार–प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं सलाहकार–उपकुलपति डी.ए.वी. विश्वविद्यालय,

जालंधर सर्वप्रथम हवन–यज्ञ का आयोजन किया गया। इसके उपरांत मुख्य अतिथि ने नव–निर्मित ब्लॉक का अपने कर–कमलों से उद्घाटन किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्रीमती सुदेश गन्धार (शिक्षाविद्) भी उपस्थित थीं। विद्यार्थियों ने उपस्थित मेहमानों का स्वागत करते हुए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। मुख्य अतिथि ने मेरिट में आए हुए छात्रों को पुरस्कृत किया। प्रधानाचार्य श्री सुधीर सिंह ठाकुर जी ने मुख्य अतिथि का आभार प्रकट करते हुए स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी।

## अरविंद गुप्ता डी. ए. वी. मॉडल टाउन दिल्ली-9 ने मनाया स्वस्थ मानस पर्व

अरविंद गुप्ता डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल मॉडल टाऊन, दिल्ली 'स्वस्थ्य मानस पर्व' का आयोजन किया गया। जिसमें सभी छात्र–छात्राओं, शिक्षक गण व अभिभावक गण ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। पर्व का शुभारम्भ वृहद् यज्ञ से किया गया।

इस आयोजन के अन्तर्गत योगासन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। द्वितीय दिन अभिभावक गण को विद्यालय में आमंत्रित करके महर्षि दयानन्द जी के उद्देश्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सकारात्मक परिचय दिया गया।

ग्यारहवीं एवं बारहवीं के छात्र–छात्राओं को भारतीय योग संस्थान में ले जाकर एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। आठवीं एवं नवीं कक्षा के छात्र–छात्राओं को 'सूर्यनमस्कार' किया द्वारा अपने अन्दर की आत्मिक शक्ति को जगाकर कार्यक्षमता को बढ़ाने का प्रशिक्षण दिया गया।

नर्सरी एवं प्राथमिक कक्षाओं की सभी शिक्षिकाओं को छोटी–छोटी क्रियाओं से खेल–खेल में ही बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास की विधि बतायी गई। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापक व अध्यापिकाओं को भी एक दिन के लिए भारतीय योग संस्थान में भेजा गया जिसमें की विधियाँ बताने के साथ–साथ भोजन और स्वास्थ्य के नियम बताये गये। योगासन,प्राणायाम, ध्यान आदि।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – श्री पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org



ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 12 जनवरी, 2014 से 18 जनवरी, 2014

# अविवेकी जन डूब जाते हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**भि वेना अनूषत, इयक्षन्ति प्रचेतसः।**
**मज्जन्त्यविचेतसः।।**

**ऋग् ९.६४.२१**

ऋषिः **काश्यपः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (**वेनाः**) प्रभु–प्रेमी मेधावी जन, (**अभि अनूषत**) अभिमुख होकर (**पवमान सोम प्रभु की**) स्तुति करते हैं। (**प्रचेतसः**) प्रकृष्ट चित्तवाले विवेकी जन, (**इयक्षन्ति**) यज्ञ करने का संकल्प करते हैं। (**अविचेतसः**) अविवेकी जन, (**मज्जन्ति**) डूब जाते हैं।

● सोम प्रभु पवमान हैं, जग को पवित्र करने वाले हैं। जो मलिनता संसार में कई कारणों से उत्पन्न होती है उसे विविध साधनों से पवित्र करनेवाले सोम प्रभु यदि न होते तो मलिनता इतनी बढ़ जाती कि प्राणियों का जीवित रहना कठिन हो जाता। वे मानव के हृदय को भी पवित्र करनेवाले हैं, परन्तु उन्हीं के हृदय को पवित्र कर सकते हैं जो अपना हृदय पवित्र होने के लिए उन्हें देते हैं। प्रभु–प्रेमी मेधावी जन सोम प्रभु के अभिमुख हो उनके प्रति प्रणत होते हैं, उनकी स्तुति करते हैं, उनकी पावनता का गुणगान करते हैं, उन्हें आत्म–समर्पण करते हैं। परिणामतः वे 'प्रचेताः' बन जाते हैं, उनका चित्त प्रकृष्ट, पवित्र, ज्ञानमय और विवेकयुक्त हो जाता हैं। 'प्रचेताः' मनुष्य दीर्घद्रष्टा होते हैं। जिस यज्ञ को अन्य लोग निरर्थक समझते हैं, उन्हें वही प्यारा होता है। वह अपने जीवन में यज्ञ करने का संकल्प लेते हैं। वे सोम–यज्ञ करते हैं, सोम प्रभु के नाम से यज्ञ में आहुतियाँ डालते हैं, 'सोम' प्रभु का भजन–कीर्तन करते हैं और उससे प्रेरणा पाकर स्वयं भी साक्षात् 'सोम' बन जाते हैं। उनके जीवन में सोम–सदृश रसमयता, मधुरता और पावनता आ जाती है। 'सोम' के आदर्श को अपने सम्मुख रखते हुए वे अन्य यज्ञों का भी आयोजन करते हैं। 'सोम' प्रभु पावनता के यज्ञ को चला रहे हैं, वे भी समाज को पावन करते हैं। 'सोम' प्रभु सृष्टि–यज्ञ चला रहे हैं, वे भी सर्जनात्मक कार्यों को करते हैं। 'सोम' प्रभु पालन–पोषण और पूर्ति का यज्ञ कर रहे हैं, वे भी निर्बलों का पालन करते हैं, अपुष्टों को पुष्टि देते हैं, अपूर्णों के दोषों को दूर कर उनके छिद्र भरते हैं। यज्ञमयी नौका पर चढ़कर वे भव–सागर से पार हो जाते है। परन्तु जो 'अविचेताः' हैं, अविवेकी हैं, अल्पदर्शी हैं, वे न 'सोम' प्रभु का स्तवन करते हैं, न यज्ञ करते हैं। परिणामतः वे भव–सागर में डूब जाते हैं और दुर्गति पाते हैं।

❑

**वेद मंजरी से**

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

# तत्त्व-ज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

**बात चल रही थी कि धन को ही परम तत्त्व समझना भारी भूल है। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए स्वामी जी ने एक प्रश्न उठाया – संसार समुद्र को कैसे तरूँ ? मेरी गति क्या होगी ? इसका उपाय क्या है ? और प्रार्थना की–प्रभो– मेरी रक्षा कीजिए और मेरे संसार–दुःख के क्षय का आयोजन कीजिए। शंकराचार्य की यह प्रार्थना सभी दर्शनकारों की भी प्रार्थना है। भगवान् धन्वन्तरि और मनु ने भी समाज को सुखी करने के लिए सुश्रुत संहिता और मनु स्मृति की रचना की। ईश्वर ने सृष्टि के कल्याणार्थ जैसे सूर्य बनाया वैसे ही वेद दिये। तत्पश्चात् ऋषियों, मुनियों व योगियों ने उपनिषद्, दर्शन स्मृतियाँ इत्यादि सब इसलिए दिये कि इन पर चलकर जीवन यात्रा सफल की जा सके।**

**इसके बाद सृष्टि विज्ञान को जान लेना वास्तविक तत्त्व तक पहुँचने में कितना आवश्यक है इस पर चर्चा आरम्भ हुई। प्राचीन ऋषियों ने समाधि की अवस्था में इस सारी रचना के रहस्य को देख लिया था। वेद आधार पर सात परिधियों, 21 समिधा का बात कहकर, पृथिवी, जल, वायु और आकाश की रचना बतायी और फिर मनुष्य शरीर की बात हुई।**

**– अब आगे**

**सारे शास्त्रों का एक तत्त्व,**

यह तो हुई वेद की बात, अब दर्शनों तथा अन्य शास्त्रों को लीजिये। मनुस्मृति, सुश्रुत, दर्शन, उपनिषद् तथा अन्य शास्त्रों का सृष्टि–उत्पत्ति के सम्बन्ध में निष्कर्ष यह है कि सम्पूर्ण भूतों–पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश तथा प्राणियों का कारण तीन गुणोंवाली मूल प्रकृति अथवा ब्रह्म समस्त जगत् की उत्पत्ति का कारण है। सब–के–सब शास्त्र इस बात पर सहमत है कि यह विश्व महाप्रलयकाल में अन्धकारयुक्त और लक्षणों से रहित, संकेत के अयोग्य, तथा तर्क द्वारा और स्वरूप से जानने के अयोग्य, सब ओर से निद्रा की–सी दशा में था। तब ब्रह्म के सामर्थ्य से सत्, रज, तम गुणोंवाली मूल प्रकृति में गति हुई। उस गति से तीन गुणोंवाला महत्तत्त्व (जिसे निश्चयात्मक बुद्धि–तत्त्व भी कहते हैं) उत्पन्न हुआ और उस महत्तत्त्व से अहंकार उत्पन्न हुआ। यह अहंकार भी सत्, रज, तम तीनों गुणोंवाला था। तब अहंकार ने तीन रूप धारण किये :

(1) सत्त्वप्रधान अहंकार, (2) रजःप्रधान अहंकार और (3) तमःप्रधान अहंकार। फिर सत्त्व और रजःप्रधान अहंकार से मन की उत्पत्ति हुई और राजस अहंकार से इन्द्रियों की उत्पत्ति और तामस अहंकार से पञ्च–तन्मात्र की उत्पत्ति हुई।

अब इन तन्मात्राओं से क्या कुछ होता है, इसे भी देख लेना आवश्यक है। चूँकि इस सारे दृश्य का आदि मूल प्रकृति त्रिगुणात्मक है, इसलिये इससे जो महत्तत्व पैदा हुआ वह भी सत्त्व, रज, तम तीनों गुणोंवाला है और अहंकार भी। ऐसे ही अहंकार से पैदा होनेवाले सारे पदार्थ भी, पंच–तन्मात्रा तमःप्रधान अहंकार से बनते हैं।

ये तन्मात्रा क्या हैं ? भूतों का अत्यन्त सूक्ष्म रूप। जैसे वट वृक्ष के नन्हे–से बीज में सारा विशाल वट वृक्ष पत्तों, डालों तथा ऊपर से नीचे तक विद्यमान होता है, ऐसे ही तन्मात्रायों में सारे भूतों का बीज होता है। तन्मात्राओं का नाम यह है:

(1) शब्द तन्मात्र, (2) स्पर्श तन्मात्र, (3) रूप तन्मात्र, (4) रस तन्मात्र और (5) गन्ध तन्मात्र। ये तन्मात्र जब स्थूल होते हैं तो इनको पाँच विषय (1) शब्द, (2) स्पर्श, (3) रूप, (4) रस तथा (5) गन्ध कहा जाता है।

अब इन विषयों के अतिरिक्त इन्ही तन्मात्राओं से यथाक्रम आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी उत्पन्न हुए। इसका ढंग यह है :

(1) शब्द तन्मात्र से शब्द गुणवाला आकाश उत्पन्न हुआ।

(2) शब्द तन्मात्रा तथा स्पर्श तन्मात्रा से शब्द–स्पर्श गुणवाला वायु उत्पन्न हुआ।

(3) शब्द, स्पर्श तथा रूप तन्मात्रा से शब्द–स्पर्श–रूप गुणवाला तेज या अग्नि

उत्पन्न हुआ।

(4) शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध तन्मात्रा से शब्द–स्पर्श–रूप–गन्धगुणवाली पृथिवी उत्पन्न हुई।

इन स्थूल भूतों के पश्चात् फिर नाना प्रकार की ओषधियाँ, वनस्पतियाँ, वृक्ष आदि हुए। उनसे फिर अन्न, से वीर्य और वीर्य से शरीर होता है और यह क्रिया केवल हमारी पृथिवी पर ही नहीं अपितु अनकानेक करोड़ों भूगोलों, सूर्यों, चन्द्रादिकों में भी है। जैसे इस पृथिवी पर हर प्रकार की सृष्टि है, ऐसे ही सब लोक–लोकान्तरों तथा भूगोलों में है। ये रात्रि को दीखनेवाले तारागण, ये सारे नक्षत्र, सब–के–सब नाना प्रकार के जीव–जन्तुओं और मनुष्यों से इसी प्रकार आबाद हैं जैसे हमारी पृथिवी। तब अनुमान करो कि यह कितनी बड़ी सृष्टि है ? मनुष्य तो इसी सृष्टि ही का पारावार पाने के अयोग्य है।

फिर यह विचारिये कि लोक–लोकान्तरों में कोई भी स्थान ऐसा नहीं जो प्राण तथा जीवन के बिना हो। हर एक स्थान प्राणमय है। इस प्राणमय संसार का पृथिवी 1176वाँ अंश है। इस पृथिवी के जल, थल, आकाश, अग्नि, सारे–के–सारे भाग भी प्राणमय हैं, फिर मनुष्य का शरीर केवल एक जीव का स्थान नहीं अपितु अरबों–खरबों, और इन अरबों–खरबों को करोड़ों अरबों के साथ अरबों बार गुणा करने पर भी उन जीवों की गिनती नहीं हो सकती जो मनुष्य–शरीर में विद्यमान हैं। मनुष्य के रक्त में, थूक में, मल–मूत्र में, उदर तथा हर अंग में असंख्य कीट और कीटाणु पाये जाते हैं। मनुष्य के वीर्य ही में लगभग तीन अरब कीटाणु विद्यमान है। इस सारे प्राणमय संसार को देखकर मनुष्य चकित रह जाता है। धन्य हो भगवन् ! जिन्होंने अपनी कृपा से इन अगणित कीटाणुओं की योनियों से निकालकर हमें मानव–शरीर दिया ताकि हम परमतत्त्व का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

एकादश इन्द्रियाँ ये हैं–

(1) श्रवण, (2) त्वचा, (3) नेत्र, (4) घ्राण, (5) जिह्वा–ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इन्हीं से विषयों का ज्ञान होता है। (1) वाक्, (2) पाणि (हाथ), (3) पाद, (4) गुदा, (5) उपस्थ–ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। इन दशों इन्द्रियों का अधिष्ठाता मन है, जिसकी प्रेरणा के बिना ये इन्द्रिय कुछ भी करने योग्य नहीं।

**ज्ञानेन्द्रियों के विषय ये हैं** – श्रोत का विषय शब्द, त्वचा का स्पर्श, चक्षु का रूप, जिह्वा (रसना) का रस तथा घ्राण का विषय गन्ध है।

**कर्मेन्द्रियों के विषय से हैं** – वाक् का विषय बोलना, हाथों का विषय पकड़ना, लिंग का मूत्रत्याग इत्यादि, गुदा का मल–वायु–त्याग, पाद का विषय चलना है।

**चौबीस अनात्म तत्त्व**

अब इन सबका जोड़ कीजिये कि सारे तत्त्व कुल कितने हुए– (1) अव्यक्त, (2) महत्तत्त्व, (3) अहंकार, ये तीनः शब्द–तन्मात्र, स्पर्श–तन्मात्र, रूप–तन्मात्र, रस–तन्मात्र और गन्ध–तन्मात्र ये पाँच तथा गयारह इन्द्रियाँ एवं पंच महाभूत ये सोलह, कुल 3+5+16=24 तत्त्व हुए। परन्तु जितना प्रपंच आपने देखा है, जैसाकि पहले भी बताया गया है, यह सब–का–सब प्रकृति ही का कार्य है अर्थात् ये 24 तत्त्व भौतिक ही हैं। हाँ, प्रारम्भ में ब्रह्म की सामर्थ्य ने थोड़ा–सा कार्य किया था परन्तु ये 24 तत्त्व अनात्म पदार्थ ही हैं।

**यह सारा प्रपञ्च क्यों ?**

ये अनात्म तत्त्व बिना किसी चैतन्य शक्ति के तो कार्य करने में समर्थ नहीं हो सकते। फिर यह भी प्रश्न सामने आकर खड़ा हो जाता है कि सह सारा प्रपञ्च किसी प्रयोजन के लिए है या बिना प्रयोजन के ? 'योग–दर्शन' में इसका यथार्थ उत्तर दिया गया है :

**प्रकाश क्रिया–स्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम् ।। 2 । 18 ।।**

**तदर्थ एव च दृश्यस्यात्मा ।। 2 । 21 ।।**

'सत्त्व, रजस्, तमस् से बना हुआ यह पंच भूत तथा इन्द्रियरूप दृश्य संसारी जीव के भोग व मोक्ष के लिए परमात्मा ने रचा है। यह दृश्य जीव के लिए ही है।'

'योग–दर्शन' में इसी अभिप्राय का एक और सूत्र यह है :

**ते ह्लादपरितापफलाः पुण्यापुण्यहेतुत्वात् ।। 2 । 14 ।।**

'जो पूर्व–कर्म से जीव को जाति, आयु वा भोग मिलते हैं, वे पुण्यहेतुक होने से सुख देनेवाले होते हैं और पाप– हेतुक होने से दुःख के देनेवाले होते हैं।'

यदि संसार की रचना न हो तो ये सुख–दुःख कैसे भोगे जायँ ? यह सारा प्रपंच केवल जीवात्मा के हितार्थ ही है। यह प्रयोजन इस संसार का है। सांख्य में भी इस बात को स्पष्ट किया गया है :

**रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात् ।**
**पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाश्य निवर्तते प्रकृतिः ।।59।।**

'जैसे नृत्य करनेवाली नाच देखनेवालों को नृत्य दिखलाकर निवृत्त हो जाती है, इसी प्रकार प्रकृति पुरुष (आत्मा) को भोग कराने के लिए शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध–रूप से व्यवहार करती है और आत्मा का मोक्ष कराकर फिर निवृत्त हो जाती है।' प्रकृति का खेल तभी तक है जब तक आत्मा अपने कर्मानुसार अपने भोग तथा मोक्ष को प्राप्त नहीं कर लेता। परमात्मा ने यह सारी रचना जीव ही के हित के लिए की है, इसे दुःखी रखने के लिए नहीं। जीव ने जो अपनी इन्द्रियों का दुरुपयोग किया है और उनके कारण से अन्तःकरण पर जो मैल, विक्षेप तथा आवरण आ गया है उसको साफ करने के लिए कितनी ही वैज्ञानिक क्रियाएँ नाना प्रकार की योनियों, तपों और दूसरे साधनों द्वारा करनी ही पड़ती हैं।

परन्तु सृष्टि के जो चौबीस तत्त्व प्रकट किये गए हैं, इनमें तो आत्मा का कहीं संकेत नहीं। तब ये चौबीस तत्त्व कैसे कार्य करते हैं ?

वात्स्यायन जी महाराज लिखते हैं :

**आत्मा मनसा संयुज्यते मनः इन्द्रियेण इन्द्रियमर्थेण ।**

'आत्मा का मन से संयोग होता है, मन का इन्द्रियों से तथा इन्द्रियों का अर्थ से, तभी सारा कार्य होता है।' यदि पंचभूत–आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी–भी हों, पाँचों विषय भी, ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ भी हों, मन भी विद्यमान हो, परन्तु एक आत्मा शरीर से निकल जाय तो इस सारी सेना के विद्यमान होते हुए भी तो कार्य नहीं हो सकेगा। इस सम्बन्ध में भावमिश्र जी का यह श्लोक देखिये :

**एवं चतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैः सिद्धे वपुर्गृहे।**
**जीवात्मा नियतेर्बद्धो वसति स्वान्तः दूतवान् ।।**

'इस प्रकार चौबीस तत्त्वों से सिद्ध किये (रचे हुए) शरीर–रूप घर में नियति (कर्मो) के आधीन हुआ, मन–रूप दूतवाला जीवात्मा वास करता है।'

**पश्चिमी विद्वान् भी आत्मा को मानते हैं**

यदि पश्चिमी वैज्ञानिकों से पूछा जाय तो वे भी यही कहते हैं– आत्मा अवश्य है। 'Science and Religion by Seven Men of Science' के 50वें पृष्ठ पर प्रोफेसर डब्ल्यू. बी. बॉटमली का यह सिद्धान्त है– ''भौतिक अथवा रासायनिक विज्ञान मनुष्य को सन्तुष्ट नहीं कर सकता। इनसे बढ़कर और भी कोई वस्तु है। हममें से प्रत्येक के हृदय में कोई वस्तु है जो उच्च और मनुष्य को मनुष्य बनानेवाले उद्देश्यों की ओर प्रेरित करती है। प्रत्येक वस्तु की विज्ञान से व्याख्या नहीं की जा सकती। वह वस्तु प्राकृतिक जगत् से ऊपर की वस्तु है और वही जीवात्मा है।''

इस प्रकार इसी पुस्तक के 10वें पृष्ठ पर भूगर्भ–विद्या के निपुण विद्वान् प्रोफेसर एडवर्ड हुल (Prof. Edward Hull) का अनुभव दिया गया है। वे लिखते है :

''भूगर्भ–विज्ञान जगत् के शासक और रचयिता की सत्ता प्रमाणित करता है। साठ वर्ष अर्थात् अपने शिक्षाकाल से अब तक भूगर्भ–विद्या को मैं निरन्तर ऐसा ही समझता और मानता चला आ रहा हूँ। भूगर्भ–विद्या बतलाती है कि एक समय था, जब किसी प्रकार का जीवन पृथिवी पर नहीं था, परन्तु अब जीवन विद्यमान है, इसलिए अवश्य उसका प्रारम्भ किसी समय हुआ होगा। इसके साथ ही यह बात भी है कि अभाव से अभाव ही उत्पन्न होता है, अभाव से भाव नहीं होता। इसलिए अवश्य जगत् के रचयिता की सत्ता माननी पड़ती है। उसी ने प्राकृतिक जगत् रचा और जीवन को प्रादुर्भूत किया– यह भी स्वीकार करना पड़ता है।''

प्रोफैसर सिलवानस थॉम्पसन ने तो ईश्वर, जीव, प्रकृति, तीनों की अनादि सत्ता स्वीकार की (Science and Religion by Seven Men of Sceince, 1.115-129) ।

प्रकृति के सारे भौतिक पदार्थों की कार्य प्रणाली को देखकर सर ऑलिवर लॉज (Sir Oliver Lodge) ने अपनी पुस्तक "Survival of Man" में स्पष्ट लिखा है– ''मेरा विचार यह है कि एक आत्मिक सत्ता चित्त में है जो यह सब कार्य करती है। वही इच्छा को प्रभावित करती है, उसी सत्ता द्वारा उत्तेजना आत्म–जगत् से प्राकृतिक जगत् में पहुँचती है।''

सर लॉज ने शरीर में जिस प्रकार से सारा कार्य होता है, यह अन्दर का कारखाना कैसे चलता है, किस नाड़ी से क्या होता है, इन सब पर दृष्टि डालते हुए अन्त में यही निश्चय किया कि आत्मा के बिना यह कारखाना चल नहीं सकता।

पश्चिमी विद्वान और वैज्ञानिक अधिकतर अब इसी सिद्धान्त को स्वीकार करने लगे हैं कि भौतिक पदार्थों और तत्त्वों के अतिरिक्त आत्मा की शक्ति भी है और उसी की प्रेरणा से सारे कार्य होते हैं।

**हमारे पूर्वजों ने यह तथ्य कैसे जाना ?**

परन्तु हमारे पूर्वजों ने तो यह तथ्य करोड़ों वर्ष पूर्व ही जान लिया था और वेद भगवान् तथा समाधि द्वारा प्रत्यक्ष भी कर लिया था।

गौतम मुनि ने 'न्याय–दर्शन' में स्पष्ट बतलाया है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों नित्य, अनादि और स्वतन्त्र सत्तावाले हैं।

इसी कारण कणाद मुनि भी 'वैज्ञानिक दर्शन' में ईश्वर, जीव, प्रकृति, तीनों की स्वतंत्र सत्ता स्वीकार करते हैं। पतञ्जलि मुनि भी तीनों को नित्य और स्वतंत्र सत्तावाले मानते हैं। कपिल मुनि भी जीवात्मा का स्वतंत्र सत्ता का समर्थन करते हैं।

प्राचीन काल में एक बार विद्वानों के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यह सारा संसार क्या है ? हमारा जन्म कैसे और क्यों हो गया ? ये सुख–दुःख क्या हैं ? यह मृत्यु क्या है ? क्या 'काल' इस जगत् का कारण है ? हम देखते हैं कि सब वस्तुएँ ऋत्वनुसार होती हैं और सभी काल का ग्रास बनते हैं, परन्तु फिर यह बात समक्ष आ जाती है कि जिसका जैसा अपना स्वभाव (नेचर) होता है वैसा ही वह कार्य करता है। अग्नि का स्वभाव जलाना है, पानी का आग को शान्त करना है। आग न पानी को शान्त करती है, न जल अग्नि

शेष पृष्ठ 4 पर ☞

www.thearyasamaj.org



# सत्यार्थप्रकाश के कुछ उपयोगी अंश

● खुशहाल चन्द्र आर्य

डॉ. भवानी लाल जी भारतीय ने 'दयानन्द सूक्ति-मुक्तावली' नामक पुस्तक लिखी है। इसको मैंने आदि से अन्त तक अच्छी प्रकार पढ़ा है। पुस्तक अति उत्तम है। मैं यह समझता हूँ कि भारतीय जी ने इस पुस्तक को लिखकर केवल आर्य समाजियों का ही नहीं बल्कि पूरे मानव-समाज का उपकार किया है। इसमें भारतीय जी ने महर्षि दयानन्द कृत लगभग सभी ग्रन्थों का सार संक्षिप्त में लिखा है। साथ ही इस ग्रन्थ की उत्तमता इसलिए और अधिक बढ़ जाती है कि इसमें पुस्तकों के अतिरिक्त पूना में दिए पन्द्रह प्रवचन, मुम्बई प्रवचन तथा कुछ शास्त्रार्थों का भी वर्णन है। जिससे पुस्तक रोचक बन गई है। मैंने इस लेख में सत्यार्थप्रकास के कुछ उपयोगी अंशों का उल्लेख किया है। कृपया पाठकगण इनसे लाभ उठाएँ।

**1. आत्मा का स्वभावः** मनुष्य का आत्मा सत्या सत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजक श्री सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।

**2. महर्षि की प्रतिज्ञाः** यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ हूँ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ या अन्य मत वालों के साथ भी व्यवहार करता हूँ। जैसे स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में व्यवहार करता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी। मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध (रोक, अवरोध) करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्य मन के बाहर हैं।

**3. सर्वशक्तिमान का अर्थः** सर्वशक्तिमान, शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य, पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी किसी की सहायता नहीं लेता।

**4. प्रार्थना और पुरुषार्थः** जो मनुष्य जिस बात के लिए प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए। अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें तब उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करें। अपने पुरुषार्थ के बाद यदि वह वस्तु नहीं मिलती है तब ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

**5. 'यदा यदा हि धर्मस्य' का अर्थः** श्रीकृष्ण धर्मात्मा लोगों की और धर्म की रक्षा करना चाहते थे, कि मैं युग-युग में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ। क्योंकि 'परोपकाराय सतां विभूतयः' परोपकार के लिए सत्पुरूषों का तन, मन, धन होता है। तथापि इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।

**6. आर्य ही, आर्यावर्त्त के मूल निवासी हैं:** किसी संस्कृत ग्रन्थ में या इतिहास में कहीं नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से या मध्य एशिया से आए और यहाँ के जंगली लोगों से लड़कर, विजय प्राप्त कर इस देश के राजा हुए। आर्यों के आने से पहले इस देश का नाम क्या था, कोई नहीं बतला सकता तब विदेशियों के लेख माननीय कैसे हो सकते हैं।

**7 स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि होता हैः** कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वही सर्वोपरि व उत्तम होता है। विदेशियों का राज्य, चाहे कितना भी पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता, पिता के समान कृपा, न्याय और दया रखने वाला हो, तब भी पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।

**8. जन्म और मरण क्या हैः** जब शरीर से जीव निकलता है उसी का नाम मृत्यु और शरीर के साथ संयोग होने का नाम जन्म है। जब जीव, शरीर छोड़कर कुछ समय के लिए यमालय अर्थात आकाशस्थ वायु में रहता है, तत्पश्चात ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार जीव, माता के गर्भ में जाता है। यम नाम वायु का है। गरुण पुराण का कल्पित यम नहीं है।

**9. स्वर्ग और नरक क्या हैः** सुख विशेष का नाम स्वर्ग और विषय तृष्णा में फँसकर दुःख विशेष पाने का नाम नरक कहलाता है। जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो योग-साधना तथा अच्छे कर्मो द्वारा जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग या मोक्ष कहलाता है।

**10. हमारी पराधीनता के कारणः** विदेशियों का आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण-आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना, जन्म से जाति यानि वर्ण मानना कर्म से नहीं, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का प्रचार न होना आदि है। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

**11. गोवध से हानिः** जब आर्यो का राज्य था, तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। तभी आर्यावर्त्त या अन्य भूगोल के देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी रहते थे। जब से विदेशी, मांसाहारी इस देश में आकर गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की वृद्धि होती जाती है।

**12. मनुष्य कौन होता हैः** मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा की, चाहे वे महाअनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान भी हो, तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे कितना भी दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न हों।

**13. वैदिक धर्म सब से प्राचीनः** यह सिद्ध बात है कि पाँच सहस्त्र वर्षों के पूर्व वैदिक धर्म से भिन्न दूसरा कोई भी धर्म न था। क्योंकि वैदोक्त सब बातें विद्या अविरूद्ध हैं। वेदों में अप्रवृत्ति होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त हो रही है। जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। जिससे मानव-मात्र को बड़ी हानि हुई।

**14. वेदौक्त धर्म से मानवता का हितः** महाभारत से पूर्व सर्व भूगोल में एक ही वेदोक्त धर्म था। उसी में सब की निष्ठा थी और एक दूसरे का सुख-दुःख, हानि-लाभ आपस में अपने समान समझते थे, तभी भूगोल में सुख था। अब तो बहुत से मत वाले होने से बहुत दुःख और विरोध बढ़ गया है। इसका निवारण करना बुद्धिमानों का काम है।

**15. आर्यो के पतन का कारणः** स्वयंभू राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गए। क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक हो जाता है, तब आलस्य, पुरुषार्थहीनता, ईर्ष्या-द्वेष, विषयादि और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या-सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्टव्यसन बढ़ जाते हैं।

**16. महाभारत से हानिः** जब बड़े-बड़े विद्वान, राजा-महाराजा, ऋषि-महर्षि लोग, महाभारत युद्ध में बहुत से तो मारे गए और बहुत से मर गए तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईर्ष्या-द्वेष, अभिमान आपस में करने लगे। जो बलवान हुआ वह देश को दबाकर राजा बन बैठा। इस प्रकार सर्वत्र आर्यावर्त्त देश खण्ड-खण्ड राज्यों में बट गया।

**17. सार्वभौम मानवीय एकता कैस होः** जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तरों का होना नहीं छूटेगा, तब तक लोगों को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वज्जन ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह वैदिक धर्म के मानने से ही संभव है।

**गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गान्धी रोड, कलकत्ता**

---

☞ पृष्ठ 3 का शेष

# तत्त्व-ज्ञान

को जलाता है। गेंहू ही गेंहू उत्पन्न करता है, चावल नहीं। तो क्या संसार का कारण 'स्वभाव' है ? इसके साथ यह भी देखा जाता है कि हम योजनाएँ कुछ बनाते हैं और हो कुछ और ही जाता है – तब क्या संसार का कारण 'होना' या 'नियति' है ? फिर क्या यह सब-कुछ 'यदृच्छा' (चान्स) से ही हो गया ? या आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी के तत्त्व ही कारण हैं ? ये सारे संशय जब उत्पन्न हुए तो इनपर पूरा विचार करने पर भी वे किसी एक परिणाम पर न पहुँच सके। उन्होंने तब दूसरा मार्ग पकड़ा और ध्यान तथा समाधि के द्वारा इस समस्या को सुलझाया। उन्होंने समाधि में प्रत्यक्ष देखा कि संसार का कारण परमात्मा की निज शक्ति है। इसका वर्णन 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' में इस प्रकार किया है :

**ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन् देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढ़ा ।**
**यः कारणानि निखिलानि तानि कालात्मयुक्तान्यधितिष्ठत्येकः ।।**
**श्वेता० 1 । 2 ।।**

'उन्होंने ध्यान और समाधि में मग्न हो अपने कार्यों (सूर्य आदि) के अन्दर छिपी हुई, परमात्मा की निज शक्ति को प्रत्यक्ष देखा-जो परमात्मा अकेला काल वा आत्मा-समेत उन सारे कारणों का अधिष्ठाता है।

जिन तथ्यों को आजकल के वैज्ञानिक बड़ी-बड़ी लैबोरेटरी के होते हुए भी अभी तक पा नहीं सके, हमारे ऋषियों ने वे सारे तथ्य ध्यान और समाधि-अवस्था में पहुँचकर पा लिये थे; सृष्टि-रचना के एक-एक तत्त्व को प्रत्यक्ष करके देख लिया था। उन सब का व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभव भी यही था कि यह संसार एकमात्र भगवान् की सामर्थ्य से बना है। उसी ने प्रकृति को प्रेरणा दी और यह जगत् जीवात्मा के हितार्थ प्रकट हो गया है।

शेष अगले अंक में....

www.thearyasamaj.org



# क्या क्षमा और प्रायश्चित से हिंसा कर्म का पाप नष्ट हो सकता है?

● श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

जैसे क्षमा और प्रायश्चित में अंतर है वैसे ही हिंसा और पाप कर्म में भेद है। जाने अनजाने में अनेक छोटे प्राणी मारे जाते हैं। जैसे शरीर के व्यवहार से, कीटनाशक औषधियों से। गाड़ी वाहन के चलाने से, रेंगने वाले और भूनगें आदि की– जो हिंसा हो जाती है– यह सब उतना बड़ा अपराध नहीं है, क्योंकि उनके प्रति शास्त्रीय कृत्य–यज्ञ, हवन द्वारा प्रायश्चित करने से साधारण हिंसा का पाप कट जाता है।

शतपथ ब्रा. में भी लिखा है– "सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कमानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा" (शत. का. 14, 9, 4, 24, 01, 2, 10, |11पा.|11

सब पाप की प्रतिकार रूपी आहुतियों का सब कामनाओं के पूर्ण करने वाले अग्नि रूप परमात्मा के लिये यह आहुति दे रहा हूँ।

हिंसा में भेद है– मच्छर, माछी (मख्खी), खटमल, जूँ तथा रोग फैलाने वाले वाइरस एवं कृमि आदि को मारने में हिंसा नहीं अहिंसा है। क्योंकि उन्हें मारने से लाखों लोगों को उन सबके द्वारा फैलने वाले रोगों से बचाया जा सकता है।

पशु–पक्षियों से बढ़कर हिंसा और पाप, साधरण मनुष्यों को मारने में है, और साधारण मनुष्यों से बढ़कर हिंसा संगीतज्ञों, मंत्रियों, वैज्ञानिकों, माता–पिता आचार्यों तथा सन्यासियों और महात्माओं की है जो देश और समाज का उपकार करते हैं। उन्हें नहीं मारना चाहिये। मनुष्यों में भी जो आतंकवादी, अत्याचारी और जो जल्लाद हैं उन्हें मारने में कोई हिंसा नहीं अहिंसा है। क्योंकि उन्हें मार देने से लाखों लोगों की रक्षा की जाती है।

जो आतंकवादी हैं, जो बालक और माता–पिता, आचार्य का हत्याकारी है उन को माफ नहीं किया जा सकता और न उन्हें माफी मिल सकती है, इन सबका कोई प्रायश्चित नहीं होता। जितने भी उपकारक पशु–पंक्षी और मनुष्य होते हैं, उन्हें मार देने से और उन्हें किसी को क्षमाकर देने से, क्षमा नहीं होती। पशु पक्षी के मारने से मानव समाज उन्हें दंड भले ही न दे, पर ईश्वरीय न्यायव्यवस्था के अनुसार किसी न किसी रूप में उसका फल भोगना ही पड़ता है। किसी की उन्नति देखकर ईर्ष्या करना, यह भी हिंसा है। किसी ने किसी को किसी कारण वश एक थप्पड़ मार दिया उसकी माफी तो मिल सकती है, पर यदि उसे हत्या कर दे तो उसकी माफी नहीं, आजीवन कारदंड अथवा उसे कफसी भी सजा हो सकती है।

सहदेव और परमदेव दो मित्र थे। दोनों मित्र कहीं जा रहे थे। परमदेव के पास एक लाख रुपया था (यह एक पुरानी कहानी है) सहदेव के मन में स्वार्थ का पाप उदय हो गया। परमदेव को मारकर उसने वह लाख रुपया ले लिया और मृत शरीर को नदी में फेंक दिया। परमदेव के मरने के पश्चात, सहदेव की पत्नी गर्भवती हो गई, समयानुसार शिशु का जन्म हो गया। सहदेव का व्यापार बढ़ गया था, इसी इसी मध्य में उनका लड़का बीमार पड़ गया। चिकित्सा होने लगी। बड़े से बड़े डॉक्टरों से चिकित्सा सहदेव ने करायी, यहाँ तक कि विदेश तक वह चिकित्सा करा चुका, फिर भी उसका रोग ठीक नहीं हुआ। अंत में उस बालक ने हंसकर कहा कि मैं 90 हजार आप से चिकित्सा के माध्यम से ले चुका, अब जो शेष 10 हजार है वह हमारी अन्येष्टि संस्कार में खर्च कर देना, अतः मैंने तुम्हारे यहाँ जन्म लेकर अपना सब रुपया प्राप्त कर लिया।''

तात्पर्य यह कि कर्म का फल किसी न किसी के माध्यम से अवश्य भोगना पड़ता है। कर्म अपने करे या दूसरे से करावे बुरे कर्मों का बुरा फल चाहे जब भी मिले, मिलेगा अवश्य। यदि वर्तमान में नहीं मिलता तो वह ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अनुसार अगले जन्म में अवश्य मिलता है। जैसे शराब का गुण नशा है वैसे ही बुरे कर्म का फल बुरा होता है। जैसे सात्विक भोजन में कोई नशा नहीं होता वैसे ही अच्छे कर्म का फल बुरा नहीं होता।

यह दुनिया बड़ी विचित्र है सच्चाई को न जाने बिना लोग निर्दोषी को दोषी समझते हैं। एक सज्जन आर्य थे, वह एक अफसर के घर में जब कहते तब हवन कर देते थे, वह अफसर उस आर्य का बहुत सम्मान करते थे। किन्तु उस आर्य का एक छोटा भाई था वह कभी–कभी चोरी का माल लेता था। एक दिन पुलिस ने उसे पकड़ लिया और थाने लेकर चली गई। उसकी स्त्री रोने लगी और कहने लगी आप जा कर उन्हें छुड़ा लाइये। वह आर्य सज्जन जब थाना में गया, तब दरोगा ने पूछा कि आप उसके कौन है? उन्होंने कहा मैं उसका भाई हूँ। दरोगा ने कहा आप भी आइये और थाने में बैठा दिया गया। दैवयोग से उस आर्य के परिचित दो पार्टी के नेता वहाँ मौजूद थे उन्होंने दरोगा से कहा कि जिस आर्य सज्जन को पकड़े हैं वह बहुत नेक अच्छे इंसान हैं, वे सब चोरी चारी में नहीं रहते, हम लोग उन्हें जानते हैं, बस दरोगा ने उस आर्य सज्जन को छोड़ दिया। एक दिन यही सब घटना कहने के लिये उस अफसर के क्वार्टर में वह गये, किन्तु अफसर ने बिना सोचे समझे उनको यह कह दिया। क्या आपको भी थाना में पकड़ लिया गया था? अफसर ने जैसा बात व्यवहार किया उस आर्य को ऐसा लगा उसकी नजर में वह हीन हो गया, अतः तभी से उस आर्य को अफसर ने हवन के लिये नहीं पूछा। अतः ऐसे लोगों के साथ रहने से निर्दोश, दोषी बन जाते हैं।

जब तक मनुष्य भ्रष्टाचार और घोटाला आदि से अन्याय पूर्वक भोग करता है तब तक देश और समाज के सामने वह सम्मानित और श्रेष्ठ व्यक्ति बना रहता है किन्तु समय बहुत बलवान होता है। ऐसा धन और सम्मान अधिक दिन नहीं टिकता, छिन्न–भिन्न हो जाता है। जब पकड़ा जाता है। जो क्षमा योग्य है उसको क्षमा किया जा सकता है किन्तु जिन्होंने बड़े–बड़े अपराध किये होते हैं–जैसे– हत्या, भ्रूण हत्या, नारी अपहरण, यौन शोषण और बलात्कार आदि जैसे को कभी भी क्षमा नहीं मिल सकती और न ईश्वरीय न्याय व्यवस्था से क्षमा मिल सकती है। अतः बिना दुःख भोगे पापियों का पाप क्षय नहीं होता।

ऋगवेद के सप्तम मण्डल में 104 वें सूक्त में ऐसे प्राणियों को दण्ड का विधान देखिये–

**यो यातु यातु धाने त्याह यो वा रक्षः शुचिरस्मीत्याह।**

**इन्द्रस्तं हन्तु महतावधेन विश्वस्य जन्तोर धर्मस्य दीष्ठ।।**

जो पापी राक्षस अपने को पवित्र सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा है, ऐसे छली–कपटी को भरी सभा में समस्त जनता के सामने बड़े भारी दण्ड से दण्डित करें। जिससे लोग शिक्षा ग्रहण करें।

आज संसार में हिंसा और अहिंसा की विवेचना हो रही है, परन्तु वेद में जहाँ– 'सर्वाणिभूतानिमित्रस्य चक्षुषा समीक्षन्ताम। अर्थात् समस्त प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने का जहाँ आदेश है, वहाँ अथर्व 1–7–7 'त्वमग्ने यातु धानानुपबद्धाइहावह। अथैषामिन्द्रो वज्रेणापिशिर्षणिवृश्चतु।। का भी आदेश है, जिसका अर्थ है– पापी, अत्याचारी, बदमाशों को खूब समझाया जाय, समझाने पर न माने तो बाँधकर कैद में डाला जाय, तो भी न माने तो राजा का कर्त्तव्य है कि उनके सिर भी काट दे।

कुरान में पाप को क्षमा करने का आदेश है– "क्षमा करने वाला पापों का, और स्वीकारने वाला तौबा का (मं.6/सि. 24/सू. 40''अल्लाह क्षमा करता है पाप सारे, निश्चय वह क्षमा करने वाला दयालु। (मं. 6/सि. 24 सू. 39/आ. 53,67,69) कुरान की उपर्युक्त आयतों से विदित होता है कि क्षमा करने की चर्चा कुरान में बार–बार आई है, जिसका आधार खुदा का न्याय नहीं अपितु खुदा का विशेष अधिकार है। जिसका प्रयोग विवेक से नहीं बल्कि उसकी मर्जी पर निर्भर है। जब सब कुछ खुदा की मर्जी पर निर्भर करेगा तो जीवों की पुण्य में प्रवृत्ति और पाप से निवृत्ति कैसे होगी? सामान्यतः मनुष्य दण्ड के भय से अपराध करने से डरते हैं। यदि यह विश्वास हो जाय कि अपराध क्षमा किये जायेंगे तो अधिकांश मनुष्य अपराधों के अभ्यस्त हो जायेंगे।

वस्तुतः पाप क्षमा नहीं होते, कर्म और उसके फल में कार्य–कारण सम्बन्ध है। वेद का कथन है– "पक्वः पक्तारं पुनराविशाति" (अथर्व. 12/3/48) कर्मफल भोगे बिना उससे छुटकारा नहीं मिल सकता। किये हुए कर्म का फल कर्त्ता को अवश्य भोगना पड़ता है, यही सत्य सनातन वैदिक धर्म का सर्वमान्य सिद्धान्त है।

'बाइवल में कर्म फल व्यवस्था' अपने पाप की भेंट के लिये निसखोट (निर्दोष) 'एक बछिया परमेश्वर के लिये लावें और परमेश्वर के आगे बलि करें।। (तौ. लै. व्य. प.4/आ.1,3,4 भावमात्र) अध्यक्ष के पाप की निवृत्ति के लिये निर्दोष मना लावें और परमेश्वर के आगे बलि करें।। भेड़ न मिले अर्थात् धन न हो, तो कबूतर के दो बच्चे परमेश्वर को भेट करें। यदि निर्धन हो, तो कुछ आटा ही ले आवें, क्षमा किया जायेगा (तौ. लै. व्य. पर्व, 5/आ. 7, 8,10,11,13) महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि– "ईसाइयों में पाप करने से कोई धनाढ्य न डरता होगा और न गरीब; क्योंकि इनके ईश्वर ने पापों का प्रायश्चित करना सहज कर रखा है। एक यह बात ईसाइयों की बाइबल में बड़ी अद्भुत है कि बिना कष्ट किये पाप से पाप छूट जाय। क्योंकि एक तो पाप किया

शेष पृष्ठ 7 पर ☞

www.thearyasamaj.org



# अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

● डॉ. धर्मपाल आर्य

संसार में कभी-कभी ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं, जो अपने त्याग, तपस्या, परामार्थ एवं बलिदान से नए युग और नए इतिहास का निर्माण करते हैं। वे युग प्रवर्त्तक होते हैं। उनके पद चिह्नों पर चलकर आने वाली पीढ़ियाँ अपने को धन्य मानती हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक क्षेत्रों में नई दिशा प्रदान करने वाले महापुरुषों की श्रृंखला लम्बी है। हमें ऐस महापुरुषों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करना चाहिए, ताकि हम उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण कर सकें तथा सामाजिक कल्याण के कार्य करके अपने जीवन को अर्थवत्ता तथा सार्थकता प्रदान कर सकें। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही महापुरूष थे। वे एक ऐसे पारसमणि थे, जिसके स्पर्श से अनेक पाप-पंक-निमज्जित मनुष्य स्वर्ण बन गए और उनका निर्मल, सुरभित, तेजोदीप्त जीवन परोपकार में लग गया। ऐसे महापुरुषों ने सर्वमेधयज्ञ तक करने में संकोच नहीं किया। वे अपनत्व से ऊपर उठ गए। वे सबके हो गए। सभी ने उनको अपना माना। ऐसे ही महामानव थे स्वामी श्रद्धानन्द, जो मात्र एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती के ओजस्वी तेजस्वी स्वरूप को देखकर, उनके अकाट्य तर्कों से प्रभावित होकर, उनकी ईश्वर और धर्म की व्याख्या सुनकर सर्वात्मना का कल्याण मार्ग के पथिक बन गए। स्वामी श्रद्धानन्द का पूर्वनाम मुंशीराम था। अनेक दुर्व्यसनों से ग्रस्त मुंशीराम का जीवन ऋषिवर के उपदेशामृत का पान करके सवर्णमय हो गया। उनका जीवन आलोकित हो उठा। उनकी सभी दिशाएं सुवासित हो गई। वे जिस दिशा में भी गए, उनकी चरण रेख वहीं पर अंकित हो गई। उनके मार्ग पर अनेक आज भी चलने को लालायित हैं।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्रद्धानन्द पूर्व नाम महात्मा मुशीराम का जन्म पंजाब के तलवन नामक ग्राम में 22 फरवरी 1856 को हुआ था। उनके पिता का नाम श्री नानक चन्द था। उनकी शिक्षा-दीक्षा बनारस और लाहौर में हुई। उनका विवाह श्रीमती शिवदेवी से हुआ जो 35 वर्ष की आयु में अपने दो पुत्रों और दो पुत्रियों को छोड़कर चल बसीं। मुंशीराम नायब तहसीलदार बने। उनका मन नौकरी में न लगा। उन्होंने फिल्लोर में, और बाद में जालन्धर में वकालत शुरुकर दी। यहाँ भी उनका मन न लगा। वे आर्य समाज के क्षेत्र में प्रवृत्त हुए। 1879 में उन्होंने बरेली में महर्षि दयानन्द सरस्वती से भेंट की थी। यहाँ से उनके जीवन में नया मोड़ आया। कालान्तर में वे आर्य जगत के सिरमौर बने ऋषिवर के सिद्धान्तों से प्रभावित हुए और आर्य समाज बच्छोंवाली लाहौर के सदस्य बने उनके पहले ही भाषण से तत्कालीन प्रधान लाला सांईदास बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा था- 'हम सब के कर्त्तव्य और मन्तव्य एक होने चाहिए। इसलिए जो वैदिक धर्म के एक-एक सिद्धान्त के अनुकूल अपना जीवन नहीं ढाल रहा है, उसे उपदेशक बनने का साहस नहीं करना चाहिए।' त्याग और तपस्या के बिना। धर्म प्रचार नहीं हो सकता। इस पवित्र कार्य के लिए स्वार्थ त्यागी पुरुषों की आवश्यकता है। लाला सांइदास ने घर लौटकर अपने आर्य समाजी मित्रों से कहा था- 'आर्य समाज में यह नई। स्पिरिट आई है। देखें-यह आर्य समाज को तारती है या डुबो देती है।' लाला सांइदास में किसी मुनष्य के अन्तस्तल में झांक कर, उसके व्यक्तित्व को परखने और उसे अपनी ओर आकर्षित करने की विलक्षण शक्ति थी। महात्मा हंसराज, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला लाजपत राय जैसे युवकों को आर्य समाज में लाने का श्रेय उन्हीं को है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने सन् 1900 में गुरुकुल गुजरांवाला प्रारम्भ किया। उसी को आगे चलकर हरिद्वार में स्थानान्तरित किया और उसे विशाल रूप दिया। 4 मार्च 1902 को वैदिक ऋषियों के आदर्शों के अनुरूप, राष्ट्र के लिए समर्पित नवयुवक तैयार करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह गुरुकुल शिक्षा के क्षेत्र में एक स्वायत्त और सर्वप्रभुता सम्पन्न संस्था थी। उसका सरकारी शिक्षातन्त्र से कुछ लेना देना न था। महाविद्यालय अपनी ही डिग्रियाँ देता था। वहाँ की परीक्षाओं में दसवीं की पदवी- विद्याधिकारी थी। वहाँ पर वाग्वर्धिनी सभाएँ हुआ करती थीं, इस प्रकार गुरुकुल वास्तव में एक आदर्श कुल था। इस आदर्श कुल के आदर्श पिता महात्मा मुंशीराम थे। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति की जड़े भारतभूमि की आर्य संस्कृति में ही थीं। शिक्षा के नूतन प्रयोग की एक अन्य विशेषता थी कि सम्पूर्ण शिक्षा आर्य भाषा हिन्दी में दी जाती थी। गुरुकुल का आदर्श वातावरण सभी को मिलकर रहने की प्रेरणा देता था। वहाँ की स्थिति आरण्यक थी। सभी प्रकृति प्रेमी कलात्मक जीवन जीने के अभ्यस्त हो गए थे। वहाँ का सांस्कृतिक वातावरण जाति, वर्ण, सम्प्रदाय आदि वर्ग भेद से रहित तथा सात्विक भावों से परिपूर्ण था। वहाँ कोई छल छद्म नहीं था। सभी एक दूसरे के भ्राता जी थे। कुल पिता महात्मा मुंशीराम का व्यक्तित्व आकर्षक था। महात्मा गांधी जब गुरुकुल में महात्मा मुशीराम से मिलने गए, उन्होंने उनके कायिक व्यक्तित्व को विशाल पहाड़ के समान कहा। रैत्जे मैकडॉनल्ड जब गुरुकुल में गए तो वे उनके सौम्य व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। उन्होंने लिखा एक उन्नतकाय दर्शनीय मूर्ति हम से भेंट करने आती है।' महात्मा मुंशीराम का कायिक और मानसिक साहस पं. जवाहरलाल नेहरू के मन पर भी सदा छाया रहा। उन्होंने लिखा-विशुद्ध शारीरिक साहस का अथवा किसी भी शुभ कार्य के लिए शारीरिक कष्ट सहन करने एवं इस कार्य के लिए मृत्यु तक की परवाह न करने वाले गुणों का मैं सदा प्रशंसक रहा हूँ।' स्वामी श्रद्धानन्द में इस प्रकार का निर्भीकता पूर्ण साहस विद्यमान था। इस प्रकार भव्यता, विशालता, सांस्कृतिक धरोहर आदि गुणों में गुरूकुल और महात्मा मुंशोराम एक दूसरे के पूरक थे।

उनके जीवन में आए परिवर्तनों और उनके एकता के सूत्रों को समझने के लिए उनके लेखों और ग्रन्थों के अनुशीलन की आवश्यकता है। उन्होंने पत्रकारिता की महात्ता को अपने जीवन के प्रारंभिक दौर में ही समझ लिया था। वे शब्द की शक्ति से परिचित थे। उन्होंने 1886 में ही जालन्धर से सद्धर्म साप्ताहिक प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से 1907 सद्धर्भ प्रचारक निकाला। एक सज्जन के यह करने पर कि महर्षि दयानन्द ने अपना सम्पूर्ण लेखन आर्य भाषा में किया, आप अपना पत्र उर्दू में क्यों निकालते हैं। उन्होंने प्रचारक को हिन्दी में निकालने का निश्चय कर लिया। 1911 में उन्होंने इस पत्र को दैनिक कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पादन में गुरुकुल कांगड़ी से 'श्रद्धा' नाम की साप्ताहिक प्रत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। उन्होंने 1 अप्रैल 1926 से अंग्रेजी साप्ताहिक 'दि लिबरेटर' निकाला। स्वामीजी की प्रेरण से पं. इन्द्र जी ने अर्जुन, विजय, सत्यवादी आदि साप्ताहिक निकाले।

स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षधर थे। छः दिसम्बर 1913 को भागलपुर में हुए चतुर्थ साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए उन्होंने कहा था।

'बिना एक राष्ट्रभाषा के प्रचार के राष्ट्र निर्माण का संगठित होना ऐसा ही दुष्कर है जैसा बिना जल के मीन का जीवन। जिस समाज को सभासदों के पास एक दूसरे के हार्दिक भावों को समझने का कोई एक साधन नहीं, उनका संगठन दृढ़ कैसे हो सकता है?'

स्वामी श्रद्धानन्द जात-पाँत के भेद भाव को दूर करना चाहते थे। 26 दिसम्बर 1919को अमृतसर कांग्रेस के अपने स्वागताध्यक्ष पद से दिए गए भाषण में उन्होंने अछूतोद्धार को कांग्रेस के कार्यक्रम का आवश्यक अंग बनाने का प्रस्ताव रखा था। 4 अप्रैल 1919 की घटना हिन्दू मुसलिम एकता का एक विशिष्ट उदाहरण है। स्वामी जी महाराज ने दिल्ली की शाही जामा मस्जिद से वेदमंत्र 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता। शतक्रतो बभूविथ। अधाते सुन्मीमहे।।' के साथ अपना संदेश आरम्भ किया था। वे स्वाधीनता आन्दोलन में, सभी को एक सूत्र में संगठित करना चाहते थे। उन्होंने 1922 में अमृतसर के अकालतख्त से अपना सुप्रसिद्व व्याख्यान दिया था। उन्होंने 'गुरु का बाण' आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। फरवरी 1925 में महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर उनकी महर्षि के प्रति कृतज्ञता से परिपूर्ण श्रद्धांजलि आज भी हमारा मार्गदर्शन है। उनकी सत्यनिष्ठा और स्वाभिमान की भावना हम सभी के लिए प्रेरणास्पद है। उनका जीवन त्याग और तपस्या से परिपूर्ण था। 23 दिसम्बर 1926 को उन्होंने अन्तिम साँस ली। वे आजीवन राष्ट्रोत्थान के कार्यों में लगे रहे।

स्वामी जी के विचार उदार थे। उनका हृदय विशाल था। वे सहिष्णु थे। मरते-मरते भी वे जीना सिखा गए। उनकी विनम्रता, निर्भीकता, बलिदान का भाव और ईश्वर में अटल विश्वास उनके जीवन के आभूषण थे। वे भारतीयों का अभिमान थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सत्यनिष्ठ, कर्त्तव्य परायण, ईश्वरविश्वासी, स्वाभिमानी, निर्भीक, आदर्श आचार्य, छात्र-वत्सल, दृढ़ सिद्धांतवादी, अग्रणी सर्वस्व समपर्ण कर्त्ता राष्ट्र नायक को हमारी विनत श्रद्धांजलि।

ए एच-16, शालीमार बाग
दिल्ली 110088

# यज्ञ की महिमा को समझें, यज्ञ केवल हवन नहीं

● भारतेन्दु सूद

यज्ञ शब्द का अर्थ है त्याग व दान अर्थात् कल्याण व परोपकार का कार्य। 'यज्ञो' वै श्रेष्ठ तमं कर्म कहकर वेद मनुष्य को अग्नि की लपटों के सामान निरन्तर ऊँचा उठने, प्रकाशवान बने रहने तथा अग्नि के समान तेजस्वी बने रहने का सन्देश देते हैं।

यज्ञ का मूल अर्थ है त्याग व दान। श्रेष्ठ कर्म जिस में दूसरों का उपकार हो उसे यज्ञ कहा गया है। यज्ञ का मूल है त्याग।

भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि– जो व्यक्ति बिना यज्ञ किए भोजन करता है वह अन्न नहीं पाप खाता है।

जिस यज्ञ की बात वेद में की गई है या श्री कृष्ण गीता में कर रहे हैं उसका अर्थ हवन नहीं जैसा कि आम व्यक्ति समझता है, अपितु अपने और दूसरों के भले के लिए किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञ है। स्कूल, कालेज, अस्पताल बनाना, पानी के साधन बनाना, कारखाना लगाना जिस में दूसरों को रोजगार मिले, चाहे आप कितने भी व्यस्त हैं अपने माता–पिता के लिए समय निकालना, असहाय व्यक्ति की सहायता करना आदि।

अर्थात् जिस कार्य द्वारा आप त्याग व दान करके दूसरे असहाय व्यक्ति या समाज के ऐसे वर्ग का भला करते हैं जो कि मनुष्य का जीवन जीने से वंचित हैं उसे यज्ञ कहते हैं। उदाहरण के लिए रक्तदान जिस में किसी अनजान व्यक्ति का जीवन बचता है सबसे ऊँचा यज्ञ है।

उपनिषद में मनुष्य के जीवन को ही यज्ञ कहा गया है। अर्थात् जीवन तभी है अगर यज्ञमयी है। इस की तीन दिशाऐं है। दीक्षा, उपसदा व दक्षिणा। दीक्षा का अर्थ है तपना–कष्ट व क्लेश सहन करना। जो यज्ञ करना चाहता है उस में दीक्षा का होना जरूरी है। दूसरे की सहायता करनी है चाहे मुझे स्वयं कुछ त्याग करना या दुख सहना क्यों न पड़े। वह यज्ञ सबसे उत्तम है जिस में अपना त्याग करके जरूरतमंद की सहायता की जाये। उपसदा का अर्थ है– त्यागमय ढंग से भोगना। अर्थात् सब सुखों के होने पर भी, दिल में जो दुःखी व असहाय है उनके लिए स्थान होना व उनकी सहायता के लिए तत्पर रहना। दक्षिणा का अर्थ है दूसरों के कल्याण के लिए अपना समय, अपनी सम्पत्ति, तन, मन व धन लगा देना।

**जिन पांच यज्ञों का मनुष्य को दैनिक जीवन में पालन करने के लिए कहा गया है वे हैं–**

(1) **ब्रह्म यज्ञ–** प्रातः काल में उपासना द्वारा परमात्मा, जो कि हमें प्राण देता है, पालता है व रक्षा करता है, का धन्यवाद करना व श्रेष्ठ बुद्धि के लिए व सारे प्राणी जगत की सुख शान्ति के लिए प्रार्थना करना।

(2) **अग्नि होत्र–** अग्नि होत्र द्वारा पर्यावरण को शुद्ध करने के साथ–साथ अग्नि की लपटों के समान निरन्तर ऊँचा उठने, प्रकाशवान बने रहने तथा अग्नि के सामान तेजस्वी बने रहने के लिए प्रभु की स्तुति करना।

(3) **पितृ यज्ञ –** घर में माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी व दूसरे बुजुर्गो की सेवा करना।

(4) **अतिथि यज्ञ–** घर में आये अतिथि व विद्वान की सेवा करना।

(5) **बलिवैश्व यज्ञ–** जो समाज में असहाय है उनकी सेवा व सहायता करना।

यहाँ यह समझने की बात है कि यह पांच यज्ञ मनुष्य के स्वयं के लिए है और उसे स्वयं करने के लिए कहा गया है। उदाहरण के लिए पितृ यज्ञ– घर में माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी व दूसरे बुजुर्गों की सेवा करना। यह यज्ञ, यज्ञ तभी है अगर स्वयं किया जाये और तभी यज्ञ का फल मिलेगा। यह बात सभी पांच यज्ञों पर लागू होती है, चाहे ब्रह्म यज्ञ है या फिर हवन।

अक्सर प्रश्न किया जाता है कि कौन सा यज्ञ सबसे महत्वपूर्ण है। इस का जबाव यह है कि यज्ञ तो सभी महत्वपूर्ण हैं पर अगर आप किन्हीं कारणों से सभी नहीं कर सकते तो दो यज्ञ जो हमें हर हालत में करने चाहिएँ वे हैं–

**ब्रह्म यज्ञ–**प्रातः काल में उपासना द्वारा परमात्मा, जो कि हमें प्राण देता है, पालता है व रक्षा करता है का धन्यवाद करना व श्रेष्ठ बुद्धि के लिए व सारे प्राणी जगत की सुख शान्ति के लिए प्रार्थना करना व दूसरा

**पितृ यज्ञ –** घर में माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी व दूसरे बुजुर्गों की सेवा करना। इन दोनों यज्ञों के किए बिना व्यक्ति कृत्घ्न की श्रेणी में आ जाता है व उसे सब कुछ भौतिक प्राप्त करके भी कभी खुशी नहीं मिल सकती।

**आज के संदर्भ में अग्निहोत्र जिसे हम हवन भी कहते है, का क्या महत्व है?**

संसार में हर चीज समय के साथ बदल रही है, समय के साथ व परिस्थितियों के साथ हर चीज़ का महत्व आंका जाता है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति ईश्वर की भक्ति, ब्रह्म यज्ञ में तो लिप्त है पर माता–पिता की अवहेलना की हुई है तो समझदार व्यक्ति उसे यही कहेगा कि माता–पिता की सेवा अर्थात् पितृ यज्ञ को भी उतना ही महत्व दे जितना कि आप ब्रह्म यज्ञ को दे रहे हैं। इसी तरह आज के समय में जब हम लाखों वाहनों द्वारा पर्यावरण को इतना दूषित कर देते हैं उस में हवन पर्यावरण के सुधार के लिए उपयोगी नहीं रह जाता। हर चीज, हर दवाई एक सीमा के अन्दर काम कर सकती है।

वही हवन भक्ति में आता है जिसे आप समझकर स्वयं करते हैं व जिस के द्वारा आप ईश्वर से जुड़ते हैं।

आम व्यक्ति के लिए दिन में आधा घंटा ईश्वर के साथ जुड़ने के लिए बहुत है, आप कैसे भी जुड़ें, अगर आप हवन द्वारा ईश्वर से जुड़ जाते हैं तो अवश्य हवन करें और दो समय करें। सदैव याद रखें ईश्वर की स्तुति सदा शांत वातारण में होती है व अपनी भाषा में होती है। यह मन व भावना का विषय है, शरीर व भाषा का नहीं।

**प्रश्न– सामान्यता यज्ञ के नाम पर हवन की ही बात क्यों होती है?**

इसका कारण यह है कि बाकी सभी यज्ञों में व्यक्ति को अपने को तैयार करना पड़ता है, तप और त्याग करना पड़ता है, आन्तरिक शुद्धि करनी पड़ती है। माता–पिता की सेवा अपने सुखों के त्याग से होती है। अतिथि व असहाय की सेवा के लिए भी कुछ त्याग जरूरी है। ब्रह्म यज्ञ के लिए आन्तरिक शुद्धि की आवश्यकता है, इसके बिना प्रभु से सम्पर्क नहीं होता। परन्तु मात्र हवन करना एक आसान रास्ता दिखता है सो अपना लिया जाता है।

**जिस यज्ञ की बात वेद में की गई है या श्री कृष्ण गीता में कर रहे हैं उसका अर्थ हवन नहीं जैसा कि आम व्यक्ति समझता है, अपितु अपने और दूसरों के भले के लिए किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञ है। स्कूल, कालेज, अस्पताल बनाना, पानी के साधन बनाना, कारखाना लगाना जिस में दूसरों को रोजगार मिले, चाहे आप कितने भी व्यस्त हैं अपने माता–पिता के लिए समय निकालना, असहाय व्यक्ति की सहायता करना आदि।**

**अर्थात् जिस कार्य द्वारा आप त्याग व दान करके दूसरे असहाय व्यक्ति या समाज के ऐसे वर्ग का भला करते हैं जो कि मनुष्य का जीवन जीने से वंचित हैं उसे यज्ञ कहते हैं। उदाहरण के लिए रक्तदान जिस में किसी अनजान व्यक्ति का जीवन बचता है सबसे ऊँचा यज्ञ है।**

231/45–ए, चंडीगढ़

☞ पृष्ठ 5 का शेष

# क्या क्षमा और प्रायश्चित...

और दूसरे जीवों की हिंसा की और खूब आनन्द से मांस खाया और पाप भी छूट गया।" (स. प्र. त्रयोदश समु. प्र. 486, मा. सं. उदयपुर)

इन्हीं पशु बलि कुप्रथाओं को वाम मार्गियों ने भी अपनाया और प्रचलित किया। जिसके चलते काली, दुर्गा आदि के सथान पर धर्म के नाम से, मन्नत के नाम से अन्धविश्वासी जन पाठा आदि की बलि देते रहते हैं। इस प्रकार धर्म का पूरा दुरुपयोग किया जा रहा है।

चाणक्य नीति में कहा गया है कि– "त्यजेद् धर्म दयही विद्याहीनंगुरुंत्मजेत्। त्यजेत्क्रोमुखीं भार्या निःस्नेहान् बान्धवाँस्त्यजेत्।। (16.4)।

अर्थ– दया रहित हिंसा से युक्त धर्म को त्याग दें, विद्या हीन गुरु को, क्रोध मुखी पत्नी को और स्नेह रहित बन्धुओं को त्याग दें।

प्रश्न– धर्म का सम्बन्ध मन से है या शरीर से?

उत्तर– मन से है क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि–

"मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः। बंधाय विषयासक्तं, मुक्त्यैनिर्विषयं स्मृतम्" मनुष्यों का मन ही संसार के बंध और मोक्ष का कारण है। विषयों में मन की आसक्ति ही बंधन का हेतु है और विषयों से मुक्त मन ही जीव के मोक्ष का कारण बन जाता है। अष्टांग योग के अनुसार 'यम–नियम' के पालन से ही मन और शरीर की शुद्धता होती है और मन की शुद्धता तथा ध्यान की एकाग्रता से ही मनुष्य आत्मा और परमात्मा को जान सकता है।

ग्रा. पो. मुरारई, जिला–वीरभूम
(प. बंगाल) 731219
मो. 8158078011

www.thearyasamaj.org



# डी.ए.वी. म्युज़ियम, आरकाईव एवं रिसर्च सेंटर

● डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी

यह प्रसिद्ध उक्ति है कि यदि आप किसी जाति या देश को समाप्त करना चाहते हो तो उसके इतिहास अर्थात् ऐतिहासिक तथ्यों को समाप्त कर दो, वह जाति या देश स्वयं ही नष्ट हो जाएगा। इसके विपरीत यह कथन भी सत्य है कि यदि किसी जाति व देश को महान व स्थाई बनाना है तो उसके गौरवशाली इतिहास को जन–जन तक प्रसारित किया जाए तो वह जाति या देश अमर हो जाएगा। हमारे देश भारत पर अनेक विदेशियों ने वर्षों राज किया उन्होंने उक्त उक्ति का अक्षरशः पालन करते हुए भारत के गौरवमय इतिहास को नष्ट करने का प्रयास किया ताकि भारतीय महापुरुषों के चरित्र को इतना धूमिल कर दिया जाए कि वे आस्था के प्रतीक न रह कर हास्य के पर्याय बन जाएं। इनमें योगी राज श्रीकृष्ण जी को योगी, राजनीतिज्ञ व कुशल कूटनीतिज्ञ युगपुरुष के स्थान पर माखनचोर, रास रंग का रसिया जैसा बना दिया गया। महर्षि दयानंद सरस्वती ने भी श्रीकृष्ण को महापुरुष बताते हुए शेष सभी बातों को मिथ्या बताया है। इसी प्रकार हमारे सभी देवी देवताओं के गौरवमय जीवन को इस प्रकार लिखवाया गया व उनके चित्रों से छेड़छाड़ करने का घटिया प्रयास किया गया। वेदों, उपनिषदों का मनमाना अर्थ किया गया। पुराणों की कपोल कल्पना में भारतीय जनमानस को भरमाया गया व एक महान् जाति व देश को पददलित कर वर्षों तक गुलाम बनाकर रखा गया। इतिहास से की गई छेड़छाड़ ने हमें कमजोर व विदेशियों को शक्तिशाली बना दिया। आज भारत आजाद है परंतु मानसिक रूप से गुलाम ही बना हुआ है जिसके कारण चारों तरफ चरित्र का संकट है। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अश्लीलता, पश्चिम की अंधाधुंध दौड़ व नग्नता का भोण्डा प्रदर्शन हमारे मानसिक दिवालियापन को दर्शाता है। धर्म की परिभाषा, चारों ओर फैले अंधविश्वास व पाखण्ड के कारण दिन–प्रतिदिन बदलती है। सर्वशक्तिमान अजर, अमर परमात्मा का स्थान नित नए जन्म लेने वाले तथाकथित भगवानों द्वारा रौंदा जा रहा है। इस सब का कारण है हमारे इतिहास का विखण्डन। हमारे धर्म ग्रंथों का विदेशियों द्वारा दोहन, और महापुरुषों का चरित्र हनन तथा ऐतिहासिक धरोहरों का नाश।

आर्य समाज के प्रवर्तक महान समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती ने इस तथ्य को समझा और भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के बिखरे सूत्रों को एकत्रित कर पहली बार गुलाम भारत के सामने भारतीयों के गौरवशाली चरित्र को प्रस्तुत किया। मानव जाति के सत्य सनातन ज्ञान वेदों की पुनर्स्थापना हेतु वेदों की ओर लौटने का नारा दिया। उन्होंने भारत के विखण्डित इतिहास में से भारतीय गौरव गाथाओं को चुनकर भारतीयों के सामने प्रकट किया। सत्यासत्य के ज्ञान हेतु सैकडों ग्रंथों पर आधारित सत्यार्थ प्रकाश नाम के ग्रंथ की रचना की।

सैकडों वर्षों की गुलामी को हटाकर भारतीयों को स्वतंत्रता समर के नए पथ पर अग्रसर करने के लिए महर्षि दयानंद ने भारतीय इतिहास के गौरवशाली अतीत को भारतीयों के सम्मुख रखकर उनमें स्वतंत्रता की स्वाभाविक ललक पैदा की। महर्षि दयानंद से प्रेरणा पाकर स्वामी श्रद्धानंद जी, महात्मा हंसराज जी, श्यामजी कृष्ण वर्मा, पं. लेखराम, शहीद राजपाल और सरदार भगतसिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रांतिकारी, समाज सुधारक एवं शिक्षाविदों ने अपना सर्वस्व होम कर भारतीय जनजागरण की ज्योति को प्रज्जवलित रखा। जिसके परिणाम स्वरूप भारत में गुलामी का अंधकार हटा और स्वतंत्रता का प्रकाश आलोकित हुआ। सतीप्रथा, बालविवाह, विधवा शोषण, पर्दा प्रथा, जातीयता व सांप्रदायिकता जैसी बुराइयों को नष्ट किया गया। धार्मिक पाखंड, टोना–टोटका, भूत–प्रेत, तंत्रमंत्र, अविद्या के स्थान पर ज्ञान–विज्ञान, गणित, अंग्रेजी जैसी भाषाओं का प्रकाश हुआ। मातृभाषा हिंदी को अपना खोया हुआ स्थान मिला और संस्कृत देवभाषा के स्थान पर आरूढ़ हुई। यह सब एक दिन में नहीं हुआ। यह सब संभव हुआ आर्यों की लंबी साधना व तपस्या तथा त्यागमय संघर्ष से। आप कल्पना करें कि सामाजिक क्षेत्र से आर्य समाज द्वारा किए सामाजिक सुधारों को निकाल दें तो समाज का स्वरूप कैसा होगा? शैक्षणिक जगत से डी.ए.वी. और गुरुकुलों की भूमिका जिसमें पंजाब विश्वविद्यालय जिसे आर्यों के योगदान के कारण महाशयों की यूनिवर्सिटी कहा जाता था वित्तीय क्षेत्र में लाला लाजपतराय व डी.ए.वी. अधिकारियों द्वारा स्थापित पंजाब नैशनल बैंक जिसे महाशयां दा बैंक कहा जाता था, पत्रकारिता के क्षेत्र में अंग्रेजी ट्रिब्यून, उर्दू मिलाप, हिन्दी पंजाब केसरी तथा हिंदू जैसी असंख्य पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका को हटाकर भारतीय समाज की कल्पना करें तो भारत कैसा दिखाई देगा। यहां यह पढ़ना लिखना आसान है परंतु इन्हें मूर्त रूप देने में आर्यों ने कितना सहा व कितने बलिदान दिए, उसकी गणना करना सरल कार्य नहीं। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि जो इतिहास शेष है वह सब भी इतिहास की परतों में छिपता जा रहा है। इन क्रांतिकारियों, समाज सधारकों एवं शिक्षाविदों तथा राजनेताओं व पत्रकारों में से कुछेक को लोग जानते होंगे, उनमें से कुछ की मूर्तियां चौराहों की शोभा होंगी तो कुछ के नाम स्कूल या कॉलेजों में शोभायमान होंगे परंतु इन सब की गिनती अंगुलियों पर की जा सकती है। इतिहास ऐसे अज्ञात महापुरुषों से भरा पड़ा है जो इस देश के नवजागरण के पथ पर न्योछावर हो गए। उन्हें न नाम मिला, न धन, न यश व कीर्ति। यह सत्य है कि उन्होंने अपना जीवन नाम या धन के लिए अर्पित नहीं किया, वे तो कवि की उस भावना पर न्यौछावर हो गए जो यहां फूल की इच्छा में व्यक्त की गई है।

**चाह नहीं देवों के सिर पर डाला जाऊं**
**चाह नहीं राजाओं के शव पर डाला जाऊं**
**चाह नहीं गोरी के गले पड़े हार में इतराऊं**
**हे वनमाली मुझे तोड़कर उस पथ पर तुम देना फेंक**
**जिस पथ मातृभूमि हित शीश चढ़ाने जाएं वीर अनेक**

19वीं शताब्दी के भारतीय नवजागरण के इतिहास के विभिन्न पक्षों को विभिन्न राजनैतिक दलों व संस्थाओं द्वारा संरक्षित किया गया है। परंतु भारतीय नवजागरण में आर्य समाज के योगदान को सुरक्षित करने का ठोस प्रयास अभी लम्बित है। अनेक उन अज्ञात क्रांतिकारियों की भूमिका, समाज सुधारकों का योगदान तथा हमारे गौरवशाली इतिहास के अतीत का वर्णन करने वाला साहित्य संरक्षित न होने के कारण भविष्य में सही मूल्यांकन की प्रतीक्षा में है। वर्तमान पीढ़ी इसके अभाव में इन सब बातों से अनभिज्ञ है। उनके आदर्श राम–कृष्ण, सीता–सावित्री न होकर पश्चिमी सभ्यता में रंगे फिल्मी हीरो हीरोइन हैं, त्याग व सफलता की स्थली भारतभूमि न होकर भोगविलास केंद्र बिंदु अमेरिका, कैनेडा व इंग्लैंड आदि हो गए हैं। हमारी आशंका है कि यदि हम अपने गौरवशाली इतिहास से इसी प्रकार विमुख रहे तो हमारी आने वाली पीढ़ियां लार्ड मैकाले के उस सपने को साकार करेंगी जिसके अनुसार उसने कल्पना की थी कि वे शरीर से भारतीय परंतु मन कर्म वचन से अंग्रेज होंगे। क्या हमें अपने देश को इस विचित्र संकट से नहीं बचाना चाहिए? क्या हमारा यह धर्म नहीं कि हम अपने पूर्वजों के गौरवशाली क्रियाकलाप से अपनी संतति को अवगत कराएं और अपने देश को विदेशी आतताइयों व विधर्मियों से अपभ्रष्ट होने से बचाएं। यह ऋषि ऋण से उऋण होने की दिशा में महत्वपूर्ण एवं फलदायी कदम होगा।

प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय नवजागरण के पर्याय डी.ए.वी. संस्थान ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझा है। डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध समिति के यशस्वी प्रधान श्री पूनम सूरी ने पहल करते हुए आर्य समाज और डी.ए.वी. के गौरवशाली इतिहास को संरक्षित व सुरक्षित करने का बीड़ा उठाया है ताकि आने वाली पीढ़ियां हमारे महापुरुषों के उज्वल चरित्र और गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा प्राप्त कर देशप्रेम व समाज सेवा की शिक्षा प्राप्त कर सकें।

भारत में अपनी तरह के इस डी.ए.वी. म्युजियम, आरकाईव एवं रिसर्च सेंटर का डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, थर्मल कालोनी, पानीपत में दिनांक 5 अक्तूबर 2013 को श्री पूनम सूरी जी ने अपने कर कमलों से उद्घाटन कर आर्य जगत को अनुपम भेंट प्रदान की हैं। उन्होंने आर्य जगत का आह्वान किया है कि वे सपरिवार इस म्युजियम का अवलोकन करें और आर्य समाज से संबन्धित होने का गौरव प्राप्त करें। यद्यपि यह इसका प्रथम चरण है तथापि इस अति महत्वाकांक्षी परियोजना द्वारा महर्षि दयानंद की जीवन झांकी, आर्य हुतात्माओं का चरित्र चित्रण व योगदान पर आधारित भित्ति चित्र तथा लाइट एवं साउण्ड की सहायता से विभिन्न गतिविधियां संचालित की जाने की योजना है। इसकी परिकल्पना में निम्नलिखित बिन्दु समाविष्ट किए गए हैं।

1. स्वतंत्रता समर एवं समाज सुधार के जीवंत दृश्य।
2. वैदिक साहित्य एवं लुप्त–गुप्त आर्य साहित्य से भरपूर पुस्तकालय।
3. महर्षि दयानंद के जीवन काल के अब तक प्रकाशित दुर्लभ पत्र पत्रिकाओं का संचय।
4. डी.ए.वी. एवं आर्य समाज से संबंधित भारत सरकार द्वारा जारी डाक टिकटों, प्रशस्ति पत्रों एवं गजट विवरणों की प्रदर्शनी।
5. डी.ए.वी., गुरुकुलों एवं अन्य आर्य शिक्षा संस्थानों, आर्य समाजों से

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

# अग्निहोत्र में जलप्रोक्षण की सार्थकता

● सुशील वर्मा

अग्निहोत्र में जल प्रोक्षण के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि में चार मन्त्र प्रयुक्त किए हैं।

**1. ओ३म् अदिते ऽ नुमन्यस्व (इस मन्त्र से पूर्व)**

**2. ओ३म् अनुमते ऽ नुमन्यस्वउ (इस मन्त्र से पशिचम)**

**3. ओ३म् सरस्वते ऽ नुमन्यस्व (इस मन्त्र से उत्तर)**

**4. ओ३म् देव सावितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। (इस मंत्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़के)**

**दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं न स्वदतु।।**

स्वामी जी ने यहाँ केवल दिशाओं का उल्लेख किया है। परन्तु यहाँ निर्देश नहीं दिया गया कि किस दिशा में किस ओर से जल छिड़कें। पहल तीन मन्त्र गोभिल गुह्य सूत्र1-3 एवं चौथा युजर्वेद से सम्बन्धित हैं। उपरोक्त प्रश्न का उत्तर अपास्तम्ब गृह्य सूत्र 1/2/3 से प्राप्त होता है।

**अदितेऽ नुमन्यस्वेति दक्षिणतः प्राचीनम्,**
**अनुमतेऽनुमन्यस्वेति पशचादूदीचीनम्**
**सरस्वत्येनुमन्यस्वेति उत्तरतः प्राचीनम्**
**देवसवितः प्रसुवेति समन्तम्।।**
**आपस्तम्ब गृह्यसूत्र** 1/2/3

अर्थात पूर्व और पश्चिम में जल छिड़कते समय दक्षिण से उत्तर की ओर जल की गति होगी और जब उत्तर में जल छिड़के तो पश्चिम से पूर्व की ओर जल की गति। चारों तरफ जल छिड़कते समय पूर्व दक्षिण कोण से प्रारम्भ करके दक्षिण पश्चिम, उत्तर पूर्व क्रम से प्रदक्षिणा की तरह। जल प्रोक्षण पूर्व दक्षिण कोण पर जहाँ से प्रारम्भ किया था वहीं पहुँच कर विश्राम होगा संक्षिप्त में पहले मन्त्र से जल प्रोक्षण पूर्व में अपने दाईं ओर और बाकी सभी जगह अपने बाईं ओर में जल डाला जाए।

**जल प्रोक्षण क्यों?**

1. पञ्च धृताहुतियाँ प्रदान करने के पश्चात् जल छिड़का जाए ताकि कोई जीव जन्तु अग्नि कुण्ड के समीप न आ सके। यदि यही क्रिया यज्ञ प्रारम्भ करने से पहले की जाती और बाद में अग्न्याधान किया जाता तो सम्भवतः यज्ञ कुण्ड के भीतर या समीप छिपा जीव जन्तु बाहर नहीं आ पाएगा।

2. दूसरा मुख्य कारण वैज्ञानिक है। क्योंकि यज्ञाग्नि मे आहुतियाँ डालते समय बहुत सी गैसें उत्पन्न होती हैं, जिनमें से कुछ जल के साथ फार्मेलडीहाइड बनाती है जो अपने आप में कृमिनाशक है। इस प्रकार हवन कुण्ड के समीपस्थ वातावरण पूर्णरूपेण कृमिहीन बना रहता है।

3. भौगोलिक स्वरूप

भौगोलिक रुप में पृथ्वी के अन्दर भौम अग्नि स्थापित रहती है तथा पृथ्वी के चारों ओर जल ही जल है। यही प्रारुप पृथ्वी रुप यज्ञकुण्ड के गर्भ में भौमाग्नि व इसके चारों ओर जल। यह भी यज्ञ कल्पना का प्रतिरूप है। इस जगत में अग्नि एंव सोम तत्वों का एक महत्वपूर्ण योगदान है। पवित्रता एवं सुख शान्ति तभी सन्तुलित रह सकती हैं यदि इन दोनों अर्थात अग्नि व सोम तत्व का सन्तुलन बना रहे।

4. अध्यात्म पक्षः- अध्यात्म परिप्रेक्ष्य में यदि हम मनन करें तो इसे सभी प्रकार समझा जा सकता है। हवनकुण्ड जहाँ अग्नि प्रज्वलित हो रही है वह प्रकाश लोक है। जहाँ यजमान उपस्थित है वह है मर्त्यलोक। इन दोनों लोकों के मध्य जल विद्यमान है। अर्थात भूः पृथ्वी, यजमान के बैठने का स्थान, भुवः- यज्ञकुण्ड के चारों ओर जल राशि, स्वः यज्ञाग्नि- प्रकाश लोक। यजमान ने पृथ्वी लोक से प्रकाशलोक का मार्ग तय करना है इस जल राशि को मध्यस्थ बना कर। इस जल राशि के प्रतीक रुप दो किनारे है। पहला यजमान की तरफ श्रद्धा एवं दूसरी तरफ प्रकाश अर्थात हवन कुण्ड की तरफ त्याग का। श्रद्धा एवं त्याग के द्वारा ही स्वलोक पहुँचा जा सकता है। अग्नि अपनी ज्वाला से प्रेम के जल को अमृतरूप में वाष्प बनाकर भूः के उपर से भुवः का रास्ता प्रशस्त करती हुई स्वलोक के साथ सम्बन्ध युक्त करती है।

5. आधिदैवत एवं अध्यात्म संयुक्त रूप पक्ष :-

यदि हम चारों मन्त्रो का आधिदैवत एवं अध्यात्म के संयुक्त रुप में चिन्तन करें तो परिणाम स्वरुप एक एक देवता से यज्ञ के अनुमोदन करने की प्रार्थना समक्ष प्रकट होती है।

अदितेऽनुमन्यस्व (आदिति) आधिदैवत में अदिति अर्थात प्राची का उषा। क्यों कि उषाएँ भी यज्ञ की प्रेरक हैं। अध्यात्म में अगर अखण्डनीय जीवात्मक शक्ति। यदि आत्मा का समर्थन न हो तो मनुष्य यज्ञ में प्रवृत्त नहीं हो सकता। अदिति यज्ञ की दिव्य नौका है।

अनुमतेऽनुमन्यस्व (अनुमति) आधिदैवत में यह पश्चिम सन्ध्या है। वहीं अध्यात्म में बुद्धि व मन अर्थात मनन एवं चिन्तनशीलता। इस प्रकार अनुकूल निश्चयात्मक बुद्धि विद्वानों में हमारे किए जाने वाले यज्ञ का अनुमोदन करें।

सरस्वतेऽनुमन्यस्व (सरस्वती) आधिदैवत में यह उत्तारायण की सूर्यप्रभा है जो अपने चरित्र एंव गुणों केक कारण यज्ञ की प्रेरक है। वहीं दूसरी ओर अध्यात्म में वाणी जिसके द्वारा मन्त्रोच्चारण होता है। इस प्रकार सरस्वती अर्थात वाणी द्वारा यज्ञ का अनुमोदन अति आवश्यक है।

सविता :- आधिदैवत में जहाँ सविता सूर्य स्वरुप है और इसी सूर्य द्वारा ही सम्वत्सर रुपी यज्ञ संचालित होता है। अध्यात्म में सविता अर्थात प्रेरक परमेश्वर। तात्पर्य यह कि हे प्रभो! मुझे यज्ञ की प्रेरणा से प्रेरित करते रहो।

अतः तीनों आत्मा, मन, बुद्धि और वाणी को वह सविताररुप परमेश्वर ही यज्ञ समर्थन की शक्ति, सामर्थ्य व अनुमति प्रदान करने वाला है।

अन्तिम मन्त्र के अन्य शब्द उस परमपिता परमात्मा के ही विशेषण है। वह ही गन्धर्व अर्थात आत्मा रुपी गौ को धारण करने वाला है। वेदवाणी का धारक होने से उसका नाम गन्धर्व है- "गां वाचं धरयति इति गन्धर्वः वेदवाणी धारकः परमेश्वरः"। वह पवित्र वेदवाणी व पवित्र ज्ञान का आश्रय है।

केतपू :- केतः प्रज्ञानतम् (निघण्टु 3/9) अर्थात ज्ञान विज्ञान से बुद्धि व मन को पवित्र करने वाला वही परमेश्वर है।

केत नः पुनातु- ज्ञानं विज्ञानं पुनाति सः केतपूः ईश्वर - जो प्रज्ञा विशेष है वह केतपू परमेश्वर है।

वाचस्पति - वाचः पाता वा पालयिता वा-वाणी अथवा वेदवाणी का पालक है, स्वामी है वह वाचस्पति संज्ञक ईश्वर है। इस प्रकार चारों दिशाओं में जल सिञ्चन के सदृश मैं पवित्र भावनाओं का प्रचार प्रसार कर सकूँ। इस के लिए मुझे उत्तम ज्ञान, पवित्र आचरण और मधुरवाणी से सामर्थ्य युक्त कीजिए। अतः चारों देवता हमारे यज्ञ का बाह्य व आन्तरिक अनुमोदन करें। यही है, जल सिञ्चन की सार्थकता, एवम् स्वामी जी की विनियोगात्मक विलक्षणता।

**गली मास्टर मूल चन्द वर्मा**
**फाजिलका-152123**

☞ *पृष्ठ 8 का शेष*

# डी.ए.वी. म्युज़ियम,....

संबंधित सभी प्रकार के दस्तावेज व उनके स्थापना संघर्ष की कहानी का विवरण।

6. महर्षि दयानंद सरस्वती सहित डी.ए.वी. एवं आर्य नेताओं, संन्यासियों, प्रचारकों, भजनोपदेशकों व शास्त्रार्थ महारथियों द्वारा प्रयोग की गई जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह व प्रदर्शन।

7. आर्य नेताओं आर्य संन्यासियों व भारतीय व अंग्रेज सरकार के मध्य हुए पत्र व्यवहार का संग्रह।

8. हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी सत्याग्रह, शराबबन्दी आंदोलन, लौहारू कांड आदि आर्य समाज द्वारा संचालित आंदोलनों का विवरण।

9. डी.ए.वी. तथा आर्य समाज के लिए उल्लेखनीय योगदान करने वाले प्राचार्यों, शिक्षकों एवं कार्यकर्ताओं से संबंधित समस्त विवरण।

10. महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रेरणा प्राप्त आर्य शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों, देशभक्त लेखकों, कवियों व साहित्यकारों से संबंधित सामग्री एवं विवरण।

11. भारतीय इतिहास, संस्कृति, धर्म, साहित्य पर शोध का प्रबंध।

**अपील**

महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म सन् 1824 ई. में हुआ। सन् 1875 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना हुई। सन् 1886 ई. में उनकी स्मृति मे डी.ए.वी. आंदोलन का प्रारंभ किया गया। आज डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध समिति के अंतर्गत लगभग 700 संस्थाओं का संचालन होता है। इससे कहीं अधिक वे संस्थान भी हैं जो महर्षि दयानंद की विचारधारा से प्रेरित हैं और डी.ए.वी. या आर्य समाज के नाम पर स्थापित हैं। देश विदेश में दस हजार से अधिक आर्य समाज हैं। अनाथालय, गुरुकुल एवं अन्य समाजोपयोगी संस्थान भी कार्यरत हैं। भारतीय स्वतंत्रता समर में समर्पित होने वाले ज्ञात अज्ञात क्रांतिवीरों की लंबी सूची है। जिन्होंने वेद प्रचारार्थ एक संन्यासी या प्रचारक और भजनोपदेशक व शास्त्रार्थ महारथी के रूप में अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया। उन सभी के अमूल्य योगदान को सहेजना व समेटना सरल कार्य नहीं होगा। अतः हमारी प्रार्थना है कि इन सबसे सम्बन्धित किसी प्रकार का साहित्य वस्तु उपकरण समाचार पत्र-पत्रिका जीवन चरित्र या अन्य कोई भी उपयोगी जानकारी आपके पास है तो कृपापूर्वक इस संस्थान हेतु भेजकर या संपर्क कर इतिहास एवं संस्कृति के संरक्षण के इस महान यज्ञ में अपनी आहुति देकर कृतार्थ करें। स्मरण रहे कि आपका यह योगदान उन समस्त ज्ञात-अज्ञात शहीदों, संतों एवं प्रचारकों को सच्ची श्रद्धांजलि होगा जिन्होंने हमारे कल के लिए अपना आज न्योछावर कर दिया।

**क्षेत्रीय निदेशक ए प्राचार्य**
**डा० ए० वी पब्लिक स्कूल थर्मल कालोनी**
**पानीपत (हरियाणा)**

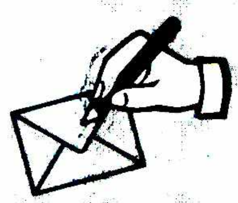

# पत्र/कविता

## यथार्थ वैदिक सिद्धान्त ही असली संपत्ति है

''आर्य जगत्'' साप्ताहिक के दिनांक 18 से 24 अगस्त तक के अंक में ''ईश्वर मूर्ति में भी व्यापक विद्यमान है'' यह श्री भावेश मेरजा जी का लेख पढ़ा। इसके पूर्व दिनांक 7 जुलाई 2013 के अंक में स्वामी सौम्यानंद जी का लेख ''भतीजे का प्रश्न ताऊ के उत्तर'' यह भी पढ़ा था। उस समय ही मुझे लग रहा था कि स्वामी सौम्यानन्द जी के विचार महर्षि स्वामी दयानंद जी के विचारों से मेल नहीं खाते। क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक, एकरस होने से सभी जड़-चेतन पदार्थों में अंतर्बाह्य व्यापक-विद्यमान है। किन्तु स्वामी सौम्यानंदजी कहते हैं कि ईश्वर केवल जीवात्माओं में ही अंतर्बाह्य व्यापक है; प्राकृतिक जड़ पदार्थों में व्यापक नहीं, केवल मात्र जड़ पदार्थों के बाहर ही व्यापक है अन्दर नहीं। यह उनकी स्वयं की विचार धारा है। वेद, महर्षि दयानंद और आर्य समाज के मंतव्यानुकूल नहीं है। श्री स्वामी सौम्यानंदजी और श्री भावेश मेरजा जी इन दोनों ने अपने-अपने लेख में जो-जो तर्क और प्रमाण आदि प्रस्तुत किये हैं, उनका तुलनात्मक विचार करने पर भी स्वामी सौम्यानंदजी का पक्ष निर्बल तथा श्री भावेश मेरजा जी का पक्ष स्पष्ट, वेदादिशास्त्र, महर्षि दयानंद और आर्य समाज के मन्तव्यानुकूल यथार्थ लगता है। इसलिए स्वामी सौम्यानन्द (महर्षि दयानंद भवन 3/4 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2) को अपने उक्त लेख पर पुनर्विचार करके सत्य स्वीकार करना चाहिए।

सितंबर 2013 के ''वेद प्रकाश'' मासिक में भी श्री भावेश मेरजा जी का लेख छपा हुआ है, यह भी मैंने दुबारा पढ़ लिया है। श्री भावेश मेरजा जी वैदिक सिद्धांत के पक्के जानकार और यथार्थ तथा पैनी दृष्टि रखने वाले हैं। उनका चहुँ ओर ध्यान रहता है। आर्य समाज के ऐसे प्रहरिओं के कारण ही आर्य समाज सैद्धांतिक रूप से अपने स्थान पर मजबूती से टिका हुआ है। यथार्थ वैदिक सिद्धांत ही आर्य समाज की असली संपत्ति है, यह हमें सदैव ध्यान में रखना चाहिए।

संभाजी पवार गुरुजी
मु. पो. घटांग्रा, वाया राणीसापर गांव
जिला परभणी (महाराष्ट्र) 431536

**********

## जय हो श्रद्धानंद महान

हिंदी-हिंदू- हिंदुस्तान,
के हित हो गए जो बलिदान।
गूँज रहा जिनका जयगान,
आओ मिल गाएं गुणगान।।
जय हो श्रद्धानंद महान

भव्य थी कोठी और दुकान,
पतिव्रत पत्नी, सुसंतान।
तन-मन-धन सब कर दिया दान,
धारा भगवा, निज परिधान।।
जय हो श्रद्धानंद महान

गुरु से सच्ची लेकर सीख,
मांगी घर, कर फैला भीख।
चालीस हजार जुटाया दान,
खोला गुरुकुल आलीशान।।
जय हो श्रद्धानंद महान

लोभ, स्वार्थ, लालच की आँधी,
से जो हो गई थी बर्बादी।
वापस लाए गृह स्थान,
लौटाया हिंदू सम्मान।।
जय हो श्रद्धानंद महान

शौर्य-पराक्रम, दृढ़ता भारी,
त्याग, समर्पण, सेवा न्यारी।
गुरु-भक्ति के श्रेष्ठ प्रमाण,
दयानंद के शिष्य हनुमान।।
जय हो श्रद्धानंद महान

विमलेश बंसल आर्या
329, द्वितीय तल, संत नगर
पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-65

## भारत की संप्रभुता की रक्षा हेतु

संप्रभुता की रक्षा करने, निष्पक्ष न्याय को सर्वसुगम करने में भारतीयों का योगदान हर दिन होना चाहिए। जनप्रतिनिधि ऐसी प्रेरणा करते रहे। कुछ प्रश्न हैं, जिनके उत्तर आपके सौजन्य से नयीं पीढ़ी को मिलें तथा युवा, किशोर, बाल को वास्तविकता का पता चले –

1. भारत को स्वाधीन किया गया था 15-08-1947 को। अंग्रेज़राज में तिब्बत में वाणिज्यदूत होता था। उस पर तिब्बत की रक्षा का दायित्व था। यह व्यवस्था किस सन् किस मास किस दिन को समाप्त की गयी? किसके द्वारा? और क्यो? यह व्यवस्था चलती रहती तो भारत और भारतीयों का, साथ ही में तिब्बत और तिब्बतियों क्या अहित होता?

2. पी.ओ.के. पाकिस्तान द्वारा अवैध कब्जाया कश्मीर क्षेत्र भारत अंग है। इसमें कोई विवाद नही है। अंतर्राष्ट्रीय विधि अनुसार भी। सारे देशों व संयुक्त राष्ट्र संघ को यह सच भारत सरकार व शासक स्वीकार क्यों नहीं कराते?

3. पी.ओ.के. मे अक्सईचिन नामक भारत अंग को पाकिस्तान शासकों ने सौंप दिया लालचीन को। पाकिस्तान ने ''पावणी को नाते मेल दी'' कहावत चरितार्थ की। यानी दो अपराध किये। एक उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत के कबायलियों ने हमला किया जकश रियासत पर। हजारों आर्य हिन्दू मारे। ललनाओं से ज्यादती की। इस नीचता में पाकिस्तानी सैनिकों ने साथ दिया।

4. तिब्बत पर लालचीन ने हमला किया 10-03-1949 को। अक्टूबर 1962 में भारत पर हमला किया। तिब्बत सीमा पर भारत का कितना क्षेत्र व कितने नागरिकों पर कब्जा अवैध किया। 1949 से 2009 मार्च/जुलाई तक कितने हज़ार बार लालचीन ने अतिक्रमण किया? भारत का कितना क्षेत्र (व नागरिक) दबाया?

5. मुद्दा एक वाली व्यवस्था क्यों नहीं की जा रही? मुद्दे 2,3,4 सम्बन्धी क्षेत्र (व नागरिक) क्यों नही छुड़ाये जा रहे।

भारत की संप्रभुता की रक्षा हेतु ''अखंडताकारी सर्वदल'' नामक मंच हो। गाँव से भारत व दक्षेस (+ तिब्बत वर्मा तक)

रामस्वरूप – 09982175551

**********

www.thearyasamaj.org



# 'वे दिन–वे लोग'

● डॉ. अनिरुद्ध भारती

(दसवीं किश्त)

## विश्वास और नैतिकता

एक बार महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंसटीन से किसी ने पूछा– "क्या आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करते हैं?" आइंसटीन ने बड़े आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया– "जब परमाणु के भीतर भी मेंने इलैक्ट्रोंस (अति सूक्ष्म परमाणु) को प्रोटीन (अणु का भी एक छोटा भाग) औार न्यूट्रोनों (अत्यन्त सुक्ष्म कण) से बने केन्द्रक के चारों ओर बड़ी लय और गति से चक्कर लगाते हुए पाया तो क्या करता? उनको ऐसी लय और गति देने वाला भला ईश्वर के सिवाय और दूसरा कौन हो सकता है? वे किसके इशारे पर अनादिकाल से ऐसे ही थिरक रहे हैं?"

2. "नैतिकता का मान दण्ड वहाँ और यहाँ!

जर्मनी के पूर्व रक्षा मंत्री कॉल थियोडोर गुटेन बर्ग अपने देश में विभागीय कार्य को संचालित करने के कारण काफी लोकप्रिय थे। अपने कार्य में चुस्त दुरुस्त और सावधान थे। लेकिन 1 मार्च 2011 को इनसे त्याग पत्र लेकर उन्हें मंत्री मण्डल से अलग कर दिया गया।

बात यह थी कि मि. गुटेन बर्ग ने मंत्री बनने से काफी समय पूर्व पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। उस समय अपनी पी. एच. डी. को पूर्ण करते समय (अपनी) थीसिस के लिये कुछ अंश दूसरे लेखक की पुस्तक से लिये थे। उन पर यह चार्ज लगाया गया कि उन्होंने अपनी थीसिस (शोध प्रबन्ध) के लिये कुछ भाग दूसरे लेखक की पुस्तक से चुरा कर लिखा है।

वास्तविकता यह है कि गुटेन बर्ग ने राजनीति में प्रवेश से बरसों पहले पी.–एच. डी. की उपाधि प्राप्त की थी। उनके इस कार्य से राज्य या शासन को कोई किसी प्रकार की वित्तीय या राजनैतिक हानि भी नहीं हुई थी। उनके मंत्रित्व काल में उन पर कभी किसी प्रकार का आरोप भी नहीं लगा। उनके विभाग पर उनके समय में किसी कमी के कारण उंगली तक नहीं उठाई गई। इसके बावजूद उन्हें नैतिक व्यवहार के उल्लंघन का दोषी पाकर उन्हें पद मुक्त कर दिया गया।"

(यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि पी.–एच.डी. की थीसिस लिखने के लिये अन्य अनेक ग्रन्थों से अपने विषय को सिद्ध करने के लिये–अवतरण लिये ही जाते हैं। शोध–प्रबन्ध–रचना का यह अभिन्न एवं अनिवार्य अंग है। परन्तु उन ग्रन्थों तथा लेखकों का नामोल्लेख करना यहाँ तक कि प्रकाशक तथा प्रकाशन स्थान भी देना होता है, जिनसे शोध–प्रबन्ध की पूर्ति में सहायता ली जाती है।) काश! भारतीय नेता गण इस घटना से कुछ सबक ले सकें!

संपर्क– 09996023046

# वृद्धों को शीतऋतु में सलाह

शीतऋतु में वृद्धों के स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद में निम्न सलाह है–

1. आँवले के निर्मित उत्पादों का सेवन श्रेष्ठ है।

2. बादाम की गिरी, सौंफ और मिश्री को समभाग में पाउडर बनायें और एक चम्मच पाउडर को दूध के साथ सेवन करें।

3. केसर श्रेष्ठ स्वास्थ्य औषधि है इसका सेवन अवश्य करें।

4. गरम दूध में चीनी के स्थान पर मिश्री का प्रयोग करें।

5. ब्राह्मी बूटी हरी 10 ग्राम, बादाम गिरी का पाउडर 10 ग्राम, छोटी इलायची और काली मिर्ची का पाउडर 5 ग्राम दूध के साथ प्रयोग करें।

6. अ.....की गिरी 10 ग्राम चबा–चबाकर दूध के साथ सेवन करें।

7. यथा सम्भव गाय के दूध का ही सेवन करें।

कृष्ण मोहन गोयल
–113, बातार कोट, अमरोदा

# गुड़गांव में गुरु विरजानन्द के जन्म दिवस पर हुआ सामवेद पारायण यज्ञ

गुड़गांव में दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती का 235 वां जन्मदिवस एवं सामवेद पारायण यज्ञ आर्य समाज सैक्टर 4 व 7 ने बड़ी श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किया। 100 परिवारों ने बड़ी श्रद्धापूर्वक सामूहिक यज्ञ किया। समाज के मन्त्री नरवीर लाल जी चौधरी मंत्रों के अर्थ उच्चारित करते रहे तथा प. बलराम आर्य भजन मण्डली ने प्रातः व सायं यज्ञ के पश्चात् ईश्वर भक्ति, देशभक्ति, समग्र समाज व देश की वर्तमान दयनीय स्थिति पर भजन प्रस्तुत किये। डा. राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने गुरु विरजानन्द तथा महर्षि दयानन्द जी की मुख्य विचारधारा पर उद्बोधन दिया। श्री रामदास जी सेवक ने सामवेद की महिमा का सुन्दर वर्णन किया।

जसवन्त राय गुगलानी जी ने बौद्धिक धर्म की विशेषताओं पर अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि समग्र समाज में कुरीतिओं व ईर्ष्या द्वेष के सन्दर्भ में गुरु विरजानन्द के आदर्श जीवन पर प्रकाश डाला तथा उसी के अनुसार स्वामी दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलकर समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्ड, अन्धविश्वास से मानवसमाज को मुक्त करने का संदेश दिया।

### एक पत्र कितना उपदेश दे रहा है –

# घनश्याम दास बिरला का पुत्र के नाम पत्र

यह जो लिखता हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना। अपने अनुभव की बात करता हूँ। संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है। यह सच बात है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया वह पशु है। तुम्हारे पास धन है, अच्छे साधन हैं। उनका सेवा के लिए उपयोग किया तब तो साधन सफल हैं अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इतनी बातों पर ध्यान रखना:–

1. धन का मौज–शौक में कभी उपयोग न करना। रावण ने मौज–शौक की थी, जनक ने सेवा की थी। धन सदा रहेगा भी नहीं इसलिए जितने दिन पास में हैं उसका उपयोग सेवा के लिए करो। अपने ऊपर कम से कम खर्च करो। बाकी दुः खियों का दुःख दूर करने में व्यय करो।

2. धन शक्ति है। इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना सम्भव है इसका ध्यान रखो।

3. अपनी संतान के लिए यही उपदेश छोड़कर जाओ यदि बच्चे ऐश आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और व्यापार को चौपट करेंगे। ऐसे नालायकों को धन कभी न देना। उनके हाथ में जाये उससे पहले ही गरीबों में बांट देना। क्योंकि तुम यह समझना कि तुम न्यासी हो और हम भाईयों ने व्यापार को बढ़ाया है तो यह समझकर कि तुम लोग धन का सदुपयोग करोगे।

4. सदा यह ख्याल रखना कि तुम्हारा यह धन जनता की धरोहर है। तुम उसे अपने स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते।

5. भगवान को कभी न भूलना, वह अच्छी बुद्धि देता है।

6. इन्द्रियों पर काबू रखना वरना यह तुमको डुबा देंगी।

7. नित्य नियम है व्यायाम करना।

8. भोजन को दवा समझकर खाना। जो स्वाद के वश में होकर खाते वे जल्दी मर जाते हैं और काम नहीं कर पाते हैं।

घनश्याम दास बिरला
साभार : परोपकारी
संकलनकर्ता– देवराज आर्यमित्र

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 08-09 /01/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

## डी.ए.वी. नेर चौक (मण्डी हि.प्र.) में लगा वैदिक चेतना शिविर

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल नेरचौक के डडौर में स्थित नए भवन में वैदिक चेतना शिविर का एक दिवसीय आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रांगण में यज्ञ का आयोजन भी किया गया। यज्ञापूर्णाहुति के उपरान्त आचार्य श्री प्रेम कुमार जी ने शिविर में उपस्थित सभी छात्र–छात्राओं शिक्षक वर्ग व अभिभावक गणों को योग शिक्षा प्रदान कर स्वस्थ तन व मन कैसे रखा जाता है यह ज्ञान दिया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित स्वामी चैतन्यमुनि ने अपने मुखारविन्द से मधुर शब्द रूपी पुष्प वर्षा कर सभी को यह बताया कि जो व्यक्ति कठोर परिश्रम करता है, अच्छी संगत में रहता है और परमात्मा को याद करता है उसे निःसन्देह सफलता प्राप्त होती है। तदुपरान्त स्कूल की प्रधानाचार्या श्री मति पूनम गुप्ता जी ने अतिथियों का स्वागत कर उन्हें स्कूल की गतिविधियों व उपलब्धियों से अवगत करवाया।

## डी.ए.वी. फतेहाबाद ने मनाया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

सेठ बद्री प्रसाद डी.ए.वी. स्कूल फतेहाबाद के बीघड़ रोड़ स्थित प्रांगण मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। हवन यज्ञ करके कर्म साधक स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला गया व श्रद्धान्जलि अर्पित की गई। सहारनपुर से आर्य समाज की भजनोपदेशिका संगीता आर्य ने अपने भजनों के माध्यम से बच्चों को संम्बोधित करते हुए बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द का नाम देश धर्म व संस्कृत की रक्षा करने वाले महान बलिदानियों में आदर के साथ लिया जाता है। महर्षि दयानन्द के महाप्रयाण के बाद उन्होंने स्वदेश स्वसंस्कृति, स्वभाषा, स्वशिक्षा, नारी कल्याण, दलितोत्थान, स्वदेशी प्रचार, वेदोत्थान, पाखण्ड खण्डन, अंधविश्वास उन्मूलन आदि के कार्यों को आगे बढ़ाया। देश की भलाई के लिए कार्य करते हुए ही वे शहीद हो गए। संगीता आर्य ने समाज मे फैली सामाजिक बुराइयों पर भी प्रहार किया। बच्चों को सन्तुलित आहार लेने की भी सलाह दी गई। प्रधानाचार्या श्री मति सुनीता मदान ने में संगीता आर्य का स्वागत किया व धन्यवाद करते हुए कहा कि उनके द्वारा दिये गए व्याख्यान से निश्चित रूप से बच्चों का शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास होगा।

## डी.ए.वी. हजारीबाग ने जीती एन.डी. ग्रोवर मेमोरियल क्विज ट्रॉफी

महात्मा नारायणदास ग्रोवर के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित एनडी ग्रोवर मेमोरियल इंटर स्कूल क्विज प्रतियोगिता में डी.ए.वी. हजारीबाग विजेता बना। इस दो दिवसीय प्रतियोगिता में झारखंड एवं पशिचम बंगाल की चुनिंदा चौबीस टीमों ने क्विज तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया। क्विज का संचालन सीबीएसई हेरिटेज क्विज के विख्यात क्विज मास्टर प्रणव मुखर्जी ने किया।

प्रतियोगिता का उद्घाटन विद्यालय के तीन भूतपूर्व छात्रों प्रशिक्षु आईपीएस रविरंजन, प्रशिक्षु डीएसपी पुरुषोत्तम सिंह एवं कैलिफार्निया में प्रबंधक के तौर पर कार्य कर रही पारुल सिन्हा ने मिल कर किया। सम्मानित अतिथि के रूप में डी.ए.वी. के क्षेत्रीय निदेशक एस आर मोदगिल एवं सिलिकॉन इंजीनियरिंग संस्थान के निदेशक संजीव नायक उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि रविरंजन ने कहा कि ग्रोवर साहब निष्काम कर्मयोगी, महान् शिक्षाविद् एवं समर्पित समाजसेवी थे। उन्होंने हजारीबाग सहित पूर्वोत्तर भारत में दो सौ से अधिक खोलकर पिछड़े प्रदेशों में शिक्षा–क्रांति का सूत्रपात किया। एस आर मोदगिल ने कहा कि ग्रोवर साहब का जन्म तो लाहौर में हुआ था लेकिन उनका जीवन खूँटी, झारखंड के आदिवासियों के लिए समर्पित था। श्री संजीव नायक ने प्रतिभागियों को गुड हेल्थ, गुड हेल्थ, गुड हैविट और गुड एजुकेशन की सीख देते हुए उन्हें क्विज एवं डिबेट के साथ–साथ खेलकूद में बढ़–चढ़कर भाग लेने की नसीहत दी।

आर्य समाज अशोक विहार फेस–1, दिल्ली–52 का 41वां वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

उत्सव में श्रीमद्भगवद्गीता पर सुमधुर कथा एवं यज्ञ डॉ. जयेन्द्र कुमार जी (नोएडा) के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। सुमधुर भजन महाशय सहदेव जी ''बेधड़क'' बागपत के थे। श्री सहदेव जी ने भजनों के द्वारा कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए।

उत्सव के दौरान ''वैदिक प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन श्री विजय भूषण जी आर्य एवं डा. सुषमा आर्या जी के संयोजकत्व में विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों के छात्र–छात्राओं द्वारा किया गया।

नई पीढ़ी ने उत्सव हर कार्यक्रम में बढचढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम के समापन दिवस पर बच्चों को पुरस्कार भी दिए गए।

## डी.ए.वी. ऊना में लगा रक्तदान शिविर (हि.प्र.)

डी.ए.वी. सैन्टेनरी पब्लिक स्कूल ऊना की राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई द्वारा रक्त–दान शिविर का आयोजन स्कूल प्रांगण में किया गया। इस शिविर का शुभारम्भ स्कूल प्राचार्य श्री अतुल महाजन ने रक्त–दान करके किया। इसके उपरान्त स्कूल के कर्मचारी वर्ग ने अपने खून का निरीक्षण करवा कर रक्त–दान किया। शिविर का आयोजन क्षेत्रीय अस्पताल ऊना के तत्वावधान से डॉ. अनिता की देखरेख में किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना की स्कूल इकाई के लगभग एक सौ स्वयंसेवकों ने आयोजन में उत्साह पूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त में राष्ट्रीय सेवा योजना की स्कूल इकाई के प्रभारी राम कुमार धीमान ने रक्त–दान करने वाल कर्मचारी वर्ग, क्षेत्रीय अस्पताल ऊना से आई हुई चिकित्सकों की टीम तथा उपस्थित जन समूह का धन्यवाद किया।

मुद्रक व प्रकाशक – श्री प्रबोध महाजन, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी